तृतीय अध्याय

'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

तृतीय अध्याय

'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

प्रस्तावना :

मनुष्य समाजशील प्राणी है। मनुष्य जिस तरह समाज की इकाई है, उसी तरह मनुष्य द्वारा निर्मित 'परिवार' नामक संस्था भी समाज की इकाई है। 'परिवार' अनेक व्यक्तियों का सम्मिलित रूप न होकर सामाजिक जीवन की पाठशाला है। परिवार द्वारा ही बच्चों पर अच्छे-बुरे संस्कारों का प्रभाव परिलक्षित होने लगता है। विविध सामाजिक कार्यों को संपन्न कराने में परिवार का अनमोल योगदान रहता हैं। परिवार ही समाज के उद्भव-विकास की प्रथम अवस्था है, साथ ही उसीसे समाज के बिगड़ने का प्रारंभ होता है। समाज का अच्छा या बुरा जो भी रूप सम्मुख उपस्थित होता है, वह परिवार से निसंदेह प्रभावित होता है।

भारतीय समाज जीवन में परिवार को अनन्य साधारण महत्ता प्रदान की गई है। भारतीय संस्कृति को जानना हो तो सबसे पहले भारतीय लोगों की रहन-सहन-खानपान को जानना होता है। ये चीजें परिवार से संबंधित होती हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति के अध्येयता को भारतीय पारिवारिक व्यवस्था को जान लेना आवश्यक होता है। संयुक्त परिवार ही भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। आज भी गाँवों में कुछ अंशों में संयुक्त परिवार की व्यवस्था बरकरार हैं, फिर भी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभावस्वरूप तथा उसके अंधानुकरण के कारण भारतीय समाज व्यवस्था की महत्वपूर्ण इकाई-परिवार विभाजन की कगार पर खड़ा है, तो कहीं-कहीं परिवार विभाजन की प्रक्रिया लगातार बढ़ती जा रही है। अत: पारिवारिक स्थितियाँ बिगड़ती जा रही हैं। फलस्वरूप विविध पारिवारिक समस्याओं का प्रजनन होने लगा।

'परिवार' को पूर्णरूपेण समझने के लिए परिवार का अर्थ क्या है? परिवार की संकल्पना एवं परिभाषा क्या है? इसे समझना आवश्यक है। तभी पारिवारिक समस्याओं तक पहुँचा जा सकता हैं।

3.1 परिवार की संकल्पना :

3.1.1 'परिवार' से अभिप्राय :

'परिवार' की संकल्पना को ज्ञात करने के लिए 'परिवार' के कोशगत अर्थ पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। कुछ कोशगत अर्थ निम्नांकित हैं -

भाषा-शंद्ब-कोष : के अनुसार 'परिवार' से तात्पर्य है कि - "आवरण, कोष। वंश, कुटुंब, कुल।"[1]

1. हिंदी शद्ब - सागर :- के अनुसार 'परिवार' शद्ब से अभिप्राय है - "1 कोई ढँकनेवाली चीज। परिच्छद। आवरण। 2 म्यान। नियम। कोष। टलवार की खोली। 3 वे लोग जो किसी राजा या रईस की सवारी में उसके पीछे उसे घेरे हुए चलते है। परिषद। 4 वे लोग जो अपने भरण पोषण के लिये किसी विशेष व्यक्ति के आश्रित हों। आश्रित वर्ग। पोष्य जन। 5 एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ठ संबंध रखनेवाले मनुष्यों का समुदाय। भाई, बेटे आदि और सगे संबंधियों का समुदाय। स्वजनों या आत्मयों का समुदाय। परिजनसमूह। कुटुंब। कुनबा। खानदान। 6 एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह। कुल।"[2]

2.मानक हिंदी कोश : - के अनुसार 'परिवार' का अभिप्रेत अर्थ है कि - "1 एक ही पूर्व पुरूष के वंशज।2 एक घर में और विशेषत: एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहनेवाले लोग।3 किसी विशिष्ट गुण, संवंध आदि के विचार से चीजों का बननेवाला वर्ग। 4 किसी राजा, रईस आदि के आगे-पीछे चलने या साथ रहनेवाले लोग।"[3]

3. मानक हिंदी-अंग्रेजी कोश : - के अनुसार 'परिवार' का अर्थ ही कि "कुटुम्ब Family "[4]

4. प्रामाणिक हिंदी कोश : - इसके अनुसार 'परिवार' का अर्थ है कि - "1 आवरण। 2 म्यान। कोष। 3 किसी राजा या राईस के साथ उसे घेरकर चलनेवाले लोग। परिषद। 4 घर के लोग। कुटुंव। 5 वंश। खानदान। 6 वाल-वच्चे। 7 एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग। कुल। जाति।"[5]

उपर्युक्त कोशगत अर्थोपर दृष्टिपत करने से ज्ञात हो जाता है कि - किसी विशिष्ट कुल, वंश, जाति, गुण, संबंध, विचार आदि से संबंधित वर्ग अथवा जनसमूह ही परिवार है। कभी-कभी परिवार के सदस्य एक विशेष व्यक्ति पर भरणपोषण के लिए निर्भर होते है। पारिवारिक सदस्यों में केवल वंश, कुल का ही संबंध होता है, ऐसा नहीं हैं। बल्कि विभिन्न वंश, कुल जाति के लोग भी एक परिवार में रह सकते हैं। किंतु सामाजिक वास्तविकता पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हो जाता है कि प्राय: एक ही वंश, कुल, जाति के लोग ही एक परिवार में रहते हैं। मूलत: परिवार के संकल्पना में ऐसा नहीं था। परिवार स्वजनों अथवा आत्मीयजनों का जनसमूह होता था, जो मिल-जुलकर रहना पसंद करते थे। अंतत: कहना होगा कि स्वजनों, आत्मीयजनों, सगे-संबंधियों के समुचित जनसमूह को 'परिवार' कहते है।

3.1.2 'परिवार' की परिभाषा :

'परिवार' को अपने शद्बजाल द्वारा अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया हैं। कुछ विद्वानों के परिवार संबंधि विचार परिभाषा के रूप में दृष्टव्य हैं -

1. बरजेस तथा लॉक :

इनके अनुसार परिवार की परिभाषा है कि - " A family is a group of persons united by the ties of marriage, blood or adoption, constituting a single household, interaching and intercommunicating with each other in their respective social role of husband and wife, mother and father, son and daughter, brother and sister and creating and maintaining a common Culture."6 अर्थात् परिवार व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के बंधनों से जुड़े हुए हैं जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं और पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र और पुत्री, भाई और बहन की निजी सामाजिक भूमिका में एक-दूसरे के साथ अंत: क्रिया और अंत:संचार करते हुए एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं और उसे बनाए रखते हैं।

2. शंभूरत्न त्रिपाठी :

"परिवार सामाजिक गुणों की निधि है। सेवा, त्याग, प्रेम, सहयोग,

सहनशीलता आदि सब महत्वपूर्ण सामाजिक गुण हैं। ये सब गुण बच्चें में ही उत्पन्न होते है।"[7] अत: परिवार वह सामाजिक गुणों की निधि है, जिससे बच्चा गुणों को ग्रहण करता हैं।

3. डॉ० महेंद्रकुमार जैन :

डॉ० महेंद्रकुमार जैन परिवार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि -"परिवार समाज की एक ऐसी संस्था है, जिसे मानव के आत्मरक्षण, वंश-वर्धन और जातीय जीवन के विकास का हेतु कहा जा सकता है। भारतीय संस्कृति में परिवार के इसी विशद दृष्टिकोण को चरितार्थ करते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को प्रश्रय दिया गया है।"[8]

4. डॉ० मंजु शर्मा :

'परिवार' को परिभाषा करते हुए डॉ० मंजु शर्मा लिखती है कि - "परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। सामाजिक संस्था में परिवार का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है... समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही संभव है।"[9] अत: परिवार समाज की वह आधारभूत इकाई है, जो समाज को विस्तृत बनाते हुए उसे जीवित रखने का कार्य करती है।

5. प्रा० ए० वाय्० कोंडेकर :

परिवार को समाज-विकास की प्रथम अवस्था मानते हुए प्रा० ए० वाय्० कोडेंकर जी लिखते है कि - "मनुष्य की कामपूर्ति, प्रजोत्पादन, बालकों का पोषण, सामाजीकरण आदि सहज-प्रवृत्ति से निर्मित हुई परिवार-संस्था समाज के विकास की प्रथम अवस्था है। सामाजिक सातत्य के लिए भावात्मक आधार पर दृढ़ता से स्थित परिवार अग्रणी संस्था है।"[10]

6. डॉ० मनोहर सराफ :

डॉ० मनोहर सराफ परिवार को प्रथम पाठशाला मानते है। उनका कथन द्रष्टव्य है - "भारतीय पारिवारिक जीवन आदर्शात्मक रहा है। यहाँ माता-पिता को अपनी पुत्रों के प्रति वात्सल्यभाव उनका संगोपन, शिक्षा-दीक्षा आदि कर्तव्यों के पालन से अपार आनंद की अनुभूति प्राप्त होती हैं। परिवार में रहकर व्यक्तित्व भी विकसित होता है। आज्ञापालन, प्रेम, सहयोग, त्याग, गुरूभक्ति की शिक्षा बालकों को परिवार में ही मिलती है इसीलिए परिवार को

प्रथम पाठशाला कहा जाता है।"[11]

7. डॉ० मंजुला गुप्ता :

डॉ० मंजुला गुप्ता ने आधुनिक युग पर दृष्टिपात करते हुए तथा वर्तमान पारिवारिक स्थिति को देखते हुए परिवार पर अपना मंतव्य दिया है - "आधुनिक युग में व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना ने परंपरागत पारिवारिक संस्था को विघटित किया है। परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी संस्था है, भारतीय समाज में परिवार संघटन का अनिवार्य अस्तित्व रहा है। समाष्टि से व्यष्टि की और बढ़नेवाले व्यक्ति ने संयुक्त परिवार की अपेक्षा लघु परिवार को अधिक महत्व दिया। वर्तमान अर्थव्यवस्था ने भी इस संस्था को एक नया आयाम दिया है।"[12]

8. डॉ० मोहिनी शर्मा :

डॉ० शर्मा दांपत्य-संबंध को परिवार का महत्वपूर्ण आधार मानती है। वह लिखती है कि - "पारिवारिक संबंधों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संबंध पति-पत्नी का होता है।"[13]

9. डॉ० सी० बी० मॅमोरिया :

डॉ० मॅमोरिया का मानना है कि विभिन्न सूत्रों के द्वारा परिवार का आपसी बंधनों में बँधा था, किंतु उन सूत्रों को शहरी वातावरण ने नष्ट कर दिया। इसलिए वे कहते है कि - " Many of the bounds that formerly united the family group have been broken in the urban environment "[14] अर्थात् विभिन्न सूत्र जो परिवार को परस्पर बाँधे हुए थे, शहरी वातावरण द्वारा नष्ट कर दिए गए हैं।

उपर्युक्त विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि भाई, वहन, माता, पिता, बेटा, पति-पत्नी, बेटी, भाभी, आदि रक्त-संबंधियों, नाते-रिश्तेदारों से परिवार वनता हैं। उक्त सभी परिवार के स्दस्य हैं। परिवार द्वारा ही पारिवारिक सदस्यों पर संस्कार, सभ्यता के परिपालन की शिक्षा देने का महत्वपूर्ण दायित्व होता है। इसी दायित्व को गभीरता से निभानेवाले परिवार से ही सामाजिक अन्नयन की अपेक्षा की जा सकती है। इसी कारणवश सामाजिक इकाई के रूप में परिवार का महत्व असाधारण होता

है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में परिवार-विशेषत: संयुक्त परिवार को महत्व प्रदान किया जाता रहा है।

अंतत: सर्वसमावेशक परिभाषा के रूप में कहा जा सकता है कि - परिवार समाज की वह इकाई है, जो रक्त-संबंधों, नाते-रिश्तेदारों से बनती है तथा उसी से सामाजिक उन्नयन अथवा पतन की शुरूवात होती है।

3.1.3 परिवार के प्रकार :

समाज में परिवार का महत्व विविध-आयामी है, इसमें कोई संदेह नहीं है। जैसे-जैसे परिवार-संस्था का महत्व बढ़ता गया, उसके विविध प्रकार अथवा भेद भी होते गए हैं। आधुनिकता ने पारिवारिक संस्था को अनेक तरह से प्रभावित किया, जिससे पारिवारिक-संस्था के विभिन्न भेद दृष्टिगत होने लगे। वर्तमान समय में परिवार के विविध भेद हो गये है, जो आज विद्‌यमान है। परिवार की संकल्पना को पूरी तरह समझने के लिए परिवार के विभिन्न भेद अथवा प्रकार देखना आवश्यक है। हरिकृष्ण रावत के अनुसार परिवार-संस्था के विविध भेद निम्नलिखित हैं -

1. परमाणुवादी परिवार (Atomistic Family) :

इस परिवार की संकल्पना को प्रो० जिमरमैन जी ने 'फैमिली एण्ड़ सिवलिजेशन' (1947) ग्रंथ में स्पष्ट किया है। परमाणुवादी परिवार को लघु परिवार भी कहा जाता है। परमाणुवादी परिवार अथवा आणविक परिवार उसे कहा जाता है, "जो पति-पत्नी तथा उनके अविवाहित संतानों द्‌वारा बने होते हैं। इस प्रकार के परिवारों में अत्यधिक व्यक्तिवादिता की भावना पाई जाती है तथा परिवार के सदस्यों को पारिवारिक नियंत्रण से व्यक्तिश: काफी छूट होती है।"[15] इस परिवार का स्वकल्याण को प्राथमिकता प्रदान करता है और पारिवारिक हितों को गौण मानता है। इस परिवार में प्रथा, परंपरा, लोकाचार आदि को महत्व न देकर पारिवारिक सदस्य की इच्छा, आकांक्षा को महत्व दिया जाता है।

इस प्रकार के परिवार में व्यक्ति स्वतंत्रता होती है, किंतु प्रथा, परंपरा आदि को महत्व न देते हुए पति-पत्नी तथा उनके अविवाहित संतानें रहती हैं।

2. जनन परिवार (Procreation Family) :

जनन परिवार किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा स्वयंनिर्मित होता हैं। इसको परिवार में स्वयं जन्म देने के साथ ही उसमें अपने संतानों की उत्पत्ति करता है। इस परिवार का जनन या निर्माण किसी व्यक्ति द्वारा होता है, इसीलिए इसे जनन परिवार कहा जाता है।

3.स्वायत्तामूलक परिवार (Autonomic Family) :

स्वायत्तामूलक परिवार में पति एवं पत्नी दोनों को स्वतंत्ररूप में निर्णय लेने का समान अधिकार होता है। इस प्रकार के परिवार को समतावादी परिवार भी कहा जा सकता है। यह वर्तमान आधुनिक परिवार का ही रूप है।

4. मातुल स्थानीय परिवार (Avanculocal Family) :

इस परिवार की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए हरिकृष्ण रावत लिखते हैं कि - "जब विवाहित दम्पत्ति पति की मां के भाई (पति के मामा) के साथ या उसके सानिध्य में रहते हैं, तब ऐसे परिवार को मातुल स्थानीय परिवार कहते है।"[16]

5. उभयवाही परिवार (Biolocal Family) :

नवदंपत्ति को पति या पत्नी में से किसी एक के परिवार में रहने की स्वतंत्रता कुछ समाज, जनजातियों में दी जाती है। वे पति-पत्नी किसी भी एक के माता-पिता के परिवार में रहते है, इस पारिवारिक संगठन अथवा व्यवस्था को उभयवाही परिवार कहते है।

6. यौगिक परिवार (Compound / Composite Family) :

यौगिक परिवार बहुविवाह के आधार पर बना हुआ होता है। इस परिवार में दो अथवा दो से अधिक परिवार की योग से बनता है। इसीलिए इसे यौगिक परिवार कहा जाता है।

7. साहचर्य परिवार (Companionship family) :

संस्थागत परिवार एवं साहचर्य परिवार - इन दोनों परिवारों का विवेचन बर्गेस एवं लॉक ने किया है। "साहचर्य परिवार को संस्थागत परिवार के विपर्यय के रूप में प्रस्तुत करते हुए बर्गेस एवं लॉक ने दांपत्य स्नेह एवं एकमत्यता पर आधारित परिवार को साहचर्य

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

परिवार की संज्ञा दी है।"[17] बर्गस का मानना है कि अमेरिकन संस्थात्मक परिवार साहचर्य परिवार में बदलते जा रहे हैं। इस परिवार के सदस्य-दांपत्य अपना वैवाहिक जीवन साहचर्य में व्यतीत करना चाहते है। किंतु इसप्रकार के युग्म वैवाहिक बंधनों में बंधने की अपेक्षा परिवर्तनशील मैत्रीवत् संबंध बनाए रखने में विश्वास करते हैं।

8. गृहस्थ परिवार (Domestic Family) :

गृहस्थ परिवार को धरोअरधारी परिवार तथा आणविक (परमाणुवादी) परिवार का ही एक रूप मानते हुए ज़िमरमेन इन दोनों ही परिवार की विशेषताओं को गृहस्थ परिवार में देखते है। इस परिवार में आणविक परिवार की तरह न अधिक व्यक्तिवादीता होती है, न धरोअरधारी परिवार की तरह इसमें वैयक्तिक स्वार्थपूर्ति को परिवार पर न्योछावर किया जाता है। बल्कि गृहस्थ परिवार में औपचारिकता और व्यक्तिवाद अथवा समष्टि और व्यष्टि का संतुलन होता है।

9. दांपत्यमूलक (दांपतिक) परिवार (Conjugal family):

दांपत्यमूलक परिवार विवाह संबंध पर आधृत होता है। इस परिवार में रक्त-संबंधों की बजाए पती-पत्नी संबंध महत्वपूर्ण होता है। इस परिवार के सदस्यों में पति-पत्नी तथा उनके आश्रित अविवाहित संतान होते हैं। इन सदस्यों के अतिरिक्त अन्य संबंधित व्यक्ति उस परिवार के गौण व्यक्ति होते हैं। पाश्चात्य परिवार अधिक मात्रा में पृथक एकाकी दांपत्यमूलक परिवार है।

10. द्विस्थानीय परिवार (Duolocal Family):

द्विस्थानीय परिवार उस परिवार को कहा जाता है जिसमें विवाहोपरांत भी दाम्पत्य साथ-साथ न रहकर स्वतंत्र रूप में उसी परिवार में रहते हैं, जिस परिवार में उनका जन्म हुआ था। पति रात्री के समय पत्नी के यहाँ जा सकता है, किंतु दिन में उसे पुन: जन्म-परिवार में लौट आना होता है। इस प्रकार के द्विस्थानीय परिवार का प्रचलन लक्षद्वीप तथा केरल के कुछ भागों में दृष्टिगत होता है।

11. रक्तमूलक (रक्तिक) परिवार (Consanguine Family):

हरिकृष्ण रावत रक्तमूलक परिवार की संज्ञा को परिभाषित करते हुए लिखते है कि "पति-पत्नी से घिरे हुए रक्त संबंधियों के समूह को रक्तिक या रक्तमूलक परिवार कहते है।"[18] इन परिवारों में वैवाहिक संबंध की अपेक्षा रक्त संबंधियों अर्थात् भाई, बहन, संतान, माता, पिता आदि को अत्याधिक महत्व प्रदान किया जाता हैं। इन परिवारों में रक्त संबंधी व्यक्ति केंद्रीय या प्रमुख होता है, तो वैवाहिक संबंधियों की स्थिति गौण होती है। रक्तमूलक परिवार का एक अच्छा उदाहरण भारतीय संयुक्त परिवार है।

12. संस्थात्मक परिवार (Institutional Family):

संस्थात्मक परिवार की ओर संकेत करते हुए उसे पारिभाषित करने का कार्य इ० डब्ल्यू० बर्गेस द्वारा हुआ है। वह कहते है - "जिसमें (परिवार में) सदस्यों का व्यवहार लोकाचारों तथा जनरीतियों द्वारा नियंत्रित किया जात है, इसे संस्थात्मक परिवार कहते है।"[19]

13. संयुक्त परिवार (Joint Family) :

संयुक्त परिवार की परिभाषा दो दृष्टिकोणों से की जाती हैं - 1. समाजशास्त्रीय तथा 2 कानूनी। इन दोनों परिभाषाओं को हरिकृष्ण रावत जी ने 'समाजशास्त्रीय विश्वकोश' में इस प्रकार दिया है - "कानूनी दृष्टिकोण के अनुसार 'एक संयुक्त परिवार में वे सभी व्यक्ति सम्मिलित किए जाते हैं, जो एक सामान्य पूर्वज के वंशज होते हैं। इनके अतिरिक्त, इसमें उनकी पत्नियां तथा अविवाहित लड़कियाँ भी आती हैं। ऐसे परिवारों की संपत्ति भी संयुक्त होती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि कोणानुसार 'संयुक्त परिवार एक ऐसा घर है, जिसमें नाभिक परिवारों की अपेक्षा अधिक पीढ़ियों (सामान्यत: इसमें तीन या अधिक पीढ़ियों) के व्यक्ति रहते हैं और जिसके सदस्य संपत्ति, आय, पारस्पारिक अधिकार एवं कर्तव्यों द्वारा एक-दूसरे से आबद्ध होते है।"[20] संयुक्त परिवार के भी उपभेद होते हैं, जो निम्न हैं -

1. वह परिवार जिसमें दांपत्य अपनी अविवाहित संतानों और अपनी विवाहित पुत्र तथा उसकी संतानोसहित निवास करता हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

2. वह परिवार जिसमें दांपत्य अपनी अविवाहित संतानो और पति के माता, पिता तथा पति के अविवाहित भाई, वहन सहित निवास करते हैं।

3. वह परिवार जिसमें दांपत्य अपनी अविवाहीत संतानो, पुत्र-पुत्रवधू तथा उनकी संतानों और दांपत्य के पति के माता, पिता के साथ निवास करते है।

4. वह परिवार जिसमें अनेक भाई अपनी-अपनी पत्नियों एवं संतानों सहित निवास करते है।

5. वह परिवार जिसमें अनेक भाई अपनी-अपनी पत्नियों, संतानों, माता तथा पिता के साथ निवास करते है।

संयुक्त परिवार विशेषत: भारत में पाया जाता है। भारत की विशेषता के संदर्भ में इरावती कर्वे लिखती है कि - " It is the larger or the smaller joint family that is typical of India."[21] अर्थात् बृहत् अथवा लघु संयुक्त परिवार ही भारत की विशेषता है। किंतु वर्तमान समय में औदयोगीकरण, नगरीकरण व्यक्तिवादिता आदि के फलस्वरूप भारतीय "संयुक्त परिवार या तो टूट-टूट कर व्यक्ति परिवार-इकाई परिवार में परिवर्तन होने लगे हैं अथवा फिर वे वैमनस्य, द्वेष और कलह के घर बनकर रह गए है।"[22] फिर भी भारतीय पारिवारिक संस्था में संयुक्त परिवार की भावना कुछ मात्रा में विद्यमान है।

14. विस्तारित परिवार (Extended Family):

विस्तारित परिवार की परिभाषा हरिकृष्ण रावत के शद्बों में - "दो या दो से अधिक नभिक परिवारों द्वारा निर्मित एक घर एवं एकिक आर्थिक इकाई को विस्तारित परिवार कहते हैं।"[23] यह परिवार-संकुल होता है जो वंशानुक्रम से संवद्ध होने के बावजूद अनेक परिवारों में विभाजित होता हैं। इस परिवार में दो या दो से अधिक पीढ़ी के लोग रहते है। यह परिवार पति या पत्नी के ओर की सभी विवाहित संतानों, इनके जीवन-साथीयों एवं परिवारों से बनता है।

15. मातृक परिवार (Maternal Family) :

"जिसमें परिवार की सत्ता की औपचारिकता मालकिन मां अथवा स्त्री-मुखिया

होती है तथा जिसमें पुरूष कुछ सीमा तक पत्नी के संबंधियों के मातहत होते हैं, मातृक परिवार कहलाता हैं।"[24] मातृक परिवारों में वंश-गणना (माता) के गोत्र तथा कुल आधृत होती है। ऐसे परिवार में पुरूष स्त्री के जरिय सत्ता प्रयोग करता हुआ दृष्टिगत होता है। कुछ ही परिवारों में इस सत्ता का अधिकार स्त्रियों को प्राप्त हैं, अन्यथा अन्यत्र नाममात्र है।

16. मातृनामी परिवार (Matronymic Family):

मातृनामी परिवार में संतान का नामकरण माता के वंश के आधार पर होता है। अत: कहने की आवश्यकता नहीं कि मातृनामी परिवार का व्यक्ति पितृकुल से संबद्ध न होकर मातृकुल से संबद्ध होता है।

17. मातृसत्तात्मक परिवार (Matriarchal Family):

इस पारिवारिक संगठन में व्यावहारिक तथा औपचारिक दोनों सत्ताओं की मुखिया माता होती है। मातृसत्तात्मक परिवार मातृवंशीय और मातृस्थानीय रक्तमूलक संबंधो द्वारा गठित होते हैं, जिनकी देख-रेख वृद्धा स्त्री द्वारा होती है। इन परिवारों में सत्ता, शक्ति, नियंत्रण, अधिकार आदि का केंद्रीयकरण माता या स्त्री के हाथों में होता हैं।

18. मातृकेंद्रित परिवार (Matricentic Family):

मातृकेंद्रित परिवार की परिभाषा 'समाजशास्त्र विश्वकोश' में दी है कि "एक ऐसा परिवार जिसमें माँ की केंद्रिय स्थिति तथा पिता की गौण स्थिति होती है, मातृकेंद्रित परिवार कहलाता है।"[25] कुछ समान व्यवस्थाओं में विवाहप्श्चात् भी पत्नी अपने रक्त संबंधियों के साथ रहती हैं। उस स्थिति में पति का पत्नी के अस्थायी संबंध रहता है तथा पति का स्थान पत्नी के परिवार में एक आगंतुक या एक सम्मानित अतिथि का होता है। अधिकांश समय पति का परिवार से बाहर रहने के कारण परिवार से संबंधी सभी निर्णय पत्नी को करने होते है। इस स्थिति में स्त्री या माता ही परिवार के केंद्र में होती है। इसे ही मातृकेंद्रित परिवार कहते है।

19. मातृ स्थानिय परिवार (Matrilocal Family):

विवाहित दंपत्ति जब पत्नी के माता-पिता या उसके स्वजनों के साथ निवास

करती है, तब उस परिवार को मातृस्थानीय परिवार की संज्ञा दी जाती है। इस परिवार के सदस्य अपने परिवार का नाम पिता से नहीं , बल्कि माता से ग्रहण किया करते है। नायर, खासी गारो आदि समाज व्यवस्था में मातृस्थानीय परिवार दृष्टिगोचर होते हैं।

20. मातृवंशीय परिवार (Matrilineal Family):

मातृवंशीय परिवार में वंश का निर्धारण माता के वंश के आधार पर किया जाता है। इस परिवार की वंश परंपरा मातृपक्ष पर आधृत होती है, न कि पितृपक्ष पर आधृत। मातृवंशीय परिवार और मातृसत्तात्मक परिवार में अंतर है। मातृवंशीय परिवार में वंश माता के वंश के आधार पर निर्धारित होता है, तो मातृसत्तात्मक परिवार में सत्ता माता के हाथों में होती है। इसमें वंश निर्धारण मातृपक्ष पर आधृत होना अनिवार्य नहीं है।

21. मातृ-पितृस्थानीय परिवार (Matri- Patrilocal Family):

मातृ-पितृस्थानीय परिवार को कहा जाता है, जिसमें "निवास स्थान के इस नियमानुसार, नवदंपत्ति कुछ समय के लिए वधू के माता-पिता और तदुपरांत स्थायी रूप से पति के माता-पिता के साथ रहने के लिए चले जाते हैं।"[26] प्रा. मर्डक 'मातृ-पितृस्थानीय परिवार' को पितृस्थानीय परिवार का ही एक रूप मानते है।

22. एक-विवाही परिवार (Monogamous Family):

एक-विवाही परिवार की परिभाषा है कि - "एक पुरूष द्वारा एक स्त्री के साथ विवाह के उपरांत जो परिवार गठित होता है, उसे एक विवाही परिवार कहते हैं।"[27] इस परिवार पद्धति में एक जीवन-साथी के जीवित रहते दूसरा विवाह नहीं होता।

23. जनक परिवार (Orientation Family / Family of Orientation):

जनक परिवार की संज्ञा उस परिवार को दी जाती है, "जिस परिवार में व्यक्ति का जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा होती है।"[28] जनक परिवार में ही व्यक्ति के संस्कारों का वीजारोपण होता है। इसी परिवार को जन्मदायी परिवार, पैदायशी परिवार कहा जाता है। जनक परिवार को अंग्रेजी मे Orientation family, family of Orientation के साथ-साथ natul family भी कहा जाता है।

24. समन्वयवादी परिवार (Syncretic Family):

जिस परिवार में पति एवं पत्नी अधिकांश निर्णय मिल-जुलकर लेते हैं, उसे समन्वयवादी परिवार कहा जाता है। इस परिवार की स्थिति अधिकत्तर मात्रा में शिक्षित परिवार में दिखाई देती है।

25. समन्वयवादी परिवार (Neolocal Family):

नवस्थानीय परिवार की व्याख्या इन शब्दों में है - "जब विवाहित दंपत्ति न पति के स्वजनों के साथ रहें और न पत्नी के परिवार में, वरन नया ही घर बसा कर रहते हैं, तब इसे नवस्थानीय परिवार कहते हैं।"[29] वर्तमान जन-जीवन में नवस्थानीय परिवार की संकल्पना निवास की दृष्टि से सर्वाधिक प्रचलन में है।

26. धरोअरधारी परिवार (Trusteeship Family):

धरोअरधारी परिवार की संकल्पना स्पष्ट करते हुए कार्ल जिमरमेन का कथन द्रष्टव्य है - "जिसमें (जिस परिवार में) संपूर्ण परिवार की बलिबेदी पर व्यक्तिगत स्वार्थों एवं हितों को न्यौछावर कर दिया जाता है।"[30] उस परिवार को धरोअरधारी परिवार कहा जाता है। इसमें व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि को महत्व होता है।

27. नाभिक परिवार (Nuclear Family):

नाभिक परिवार को जी० पी० मरडॉक जी ने 'सार्वभौमिक मानवीय समूह' की संज्ञा देते हुए उसे सामाजिक निरंतरता एवं मानव जाति के अतिजीवन के लिए आवश्यक माना है। "पारिवारिक संगठन की ऐसी आधारभूत इकाई जिसकी रचना विवाहित दंपत्ति तथा उनकी आश्रित संतानों द्वारा होती है, उसे नाभिक परिवार कहते हैं।"[31]

28. स्तंभ परिवार (Stem Family):

स्तंभ परिवार उस परिवार को कहा जाता है, जिसमें एक नाभिक परिवार के अतिरिक्त उनके अन्य संबंधी साथ-साथ रहते हो। प्रो० लीप्ले की दृष्टि से स्तंभ परिवार एक आदर्श परिवार है। इसके संदर्भ में उनका कहना है - "इसमें (स्तंभ परिवार में) पितृसत्तात्मक परिवार की अपेक्षा पारिवारिक स्थायित्व एवं निष्टा के साथ-साथ पारिवारिक सदस्यों को

व्यक्तिश: स्वतंत्रता काफी मात्रा में प्राप्त होती है।"[32]

29. पितृनामी परिवार (Patroonymic Family):

पितृनामी परिवार में व्यक्ति का संबंध पितृकुल से होता है। इस परिवार में व्यक्ति का वंश निर्धारण पितृ वंश के आधार पर होता है। व्यक्ति का नामकरण भी पितृपक्ष से संबद्ध होता है।

30. पितृकेंद्रित परिवार (Patricentric Family):

पितृकेंद्रित परिवार में सत्ता, नियंत्रण, कामकाज, निर्णय आदि के केंद्र में पिता होते हैं। इन परिवारों के केंद्र में पिता होने के कारण ही इसे पितृकेंद्रित परिवार कहा जाता हैं। पितृंकेंद्रित परिवार की स्थिति मातृकेंद्रित परिवार के विपरित होती है।

31. पितृस्थानीय परिवार (Patrilocal Family):

जब विवाहोपरांत पति के परिवार वालों के साथ पत्नी निवास करती है, तो ऐसा परिवार पितृस्थानीय परिवार कहलाता है। इस परिवार के सदस्यों में पति-पत्नी तथा पति के रिश्तेदार होते हैं।

32. पितृवंशीय परिवार (Patrilinecal Family):

जब व्यक्ति के वंश का नाम पितृपक्ष से संबंधित होता है या व्यक्ति का वंश निर्धारण पिता के आधार पर होता है, तव उस परिवार को पितृवंशीय परिवार कहा जाता है।

33. पैतृक परिवार (Paternal Family):

जब परिवार की सत्ता परिवार के किसी पुरूष-मुखिया के हाथ होती है, तव ऐसा परिवार पैतृक परिवार के नाम से जाना जाता है।"[33] इस परिवार का वंश निर्धारण पितृकुल से संवद्ध होता है। ज्येष्ठ व्यक्ति पैतृक परिवार का नियंत्रण बनाए रखता है।

34. पितृसत्तात्मक परिवार (Patriarchal Family):

पितृसत्तात्मक परिवार का नियंत्रण, सत्ता, शक्ति, अधिकार ज्येष्ठ पुरूष-मुखिया या पिता के हाथों में होती है।इस परिवार की स्थिति सभी आधुनिक समाजों में दिखाई देती है। वर्तमान समय में मातृसत्तात्मक परिवार पितृसत्तात्मक परिवार में परिवर्तित

होते जा रहे है।

35. बहुपतीय परिवार (Poluandrous / Polyandry Family):

जिस परिवार में स्त्री के अनेक पति होते हैं तथा उनसे प्राप्त संतानें होती हैं, उस परिवार को बहुपतीय परिवार कहा जाता है।

36. बहुपत्नीय परिवार (Polygynous / Polygyny) :

जिस परिवार में पुरूष की अनेक पत्नियाँ होती हैं तथा उनसे प्राप्त संताने होती हैं, उस परिवार को बहुपत्नीय परिवार कहा जाता है।

37. बहु-विवाह परिवार (Ploygamous / Polugamy Family):

जिस परिवार में स्त्री या पुरूष के एक जीवन-साथी होने की स्थिति में अथवा न होने की स्थिति में एक से अधिक विवाह होते है और वह उनसे प्राप्त संतानों के साथ निवास करता हैं, तब उस परिवार को बहु-विवाही परिवार की संज्ञा दी जाती है।

38. प्रतिशय / सममितिक परिवार (symmetrical Family):

'सिमेट्रिकल फैमिर्ली' की संकल्पना का प्रयोग सर्वप्रथम यंग तथा विलमोट ने किया। सिमिट्री' का अर्थ है - जिसके सभी भाग अथवा अंग सम हो। "यंग एवं विलमोट ने प्रतिशय या सममितिक परिवार की संकल्पना इस अर्थ में की है कि ऐसे परिवार में पति-पत्नी दोनों की वैवाहिक भूमिकाएँ समान होते हुए भी धीरे-धीरे अधिकाधिक मात्रा में समान बनती जाती हैं। ऐसे परिवारों में घरेलू श्रम-विभाजन अधिक निश्चित नहीं होता तथा सामाजिक जीवन और सामाजिक पहचान की दृष्टि से घर का केंद्रिय महत्व होता है।"[34] सममितिक परिवार दंपत्ति द्वारा सृजित एक नाभिक परिवार ही है, जो अपने संबंधियों से सहायता की प्राप्ति नहीं करता अथवा किसी भी प्रकार की सहायता की आकांक्षा ही करता है। सममितिक या प्रतिशय परिवार पूर्णरूपेण स्व-प्रशासित और आत्मनिर्भर होता है।

39. एकल परिवार (Single Family) :

जिस परिवार में केवल दंपत्ति तथा उनके अविवाहित संताने ही रहती हैं उन्हें एकल परिवार कहा जाता हैं। "संयुक्त परिवार में यदि आय का स्त्रोत काम हो तो सभी

सदस्यों की वांछित वस्तुओं की पूर्ति नहीं की जा सकती। इसीलिए कमानेवाले सदस्य अपनी स्त्री एवं बच्चों को लेकर अलग-अलग टूटते जा रहे हैं।"[35] तथा "आज की अर्थ-व्यवस्था ही ऐसी है कि चाहकर भी संयुक्त परिवार टिक नहीं सकते।"[36] इसी फलस्वरूप एकल परिवारों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात हो जाता है कि परिवार-संस्था के विभिन्न प्रकार समाज में विद्यमान है तथा उनका अपना अलग महत्व भी रहता है।

3.1.4 परिवारवाद (Familism):

परिवारवाद की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए हरिकृष्ण रावत लिखते है कि "सामाजिक संगठन का एक ऐसा स्वरूप परिवारवाद कहलाता है, जिसमें पारिवारिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।"37 व्यक्ति में पारिवारिक स्नेह की उत्कट भावना, पारिवारिक सदस्यों में परस्पर सहयोग की भावना, निष्ठा एवं परिवार को बनाये रखने की चेतना का निर्माण कर उसे विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य परिवारवाद द्वारा संपन्न होता है। परिवारवाद पारिवारिक सदस्यों को व्यष्टि हितों की अपेक्षा पारिवारिक समूह के कल्याण एवं हितों के प्रति उत्सर्ग या समर्पण भाव की माँग करता है। इसमें एक पारिवारिक सदस्य दूसरे पारिवारिक सदस्य के हितार्थ त्याग करने के लिए सदैव सुसज्य रहता है।

परिवारवाद का प्रभाव हिंदी की कई साहित्यिक कृतियों में दिखाई देता है। कावेरी परा तो वह है ही।

3.2 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ :

कोई भी साहित्य या साहित्यिक विधा की कृति किसी न किसी विचार, चिंतन को सहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत कर उन विचारों के प्रति सोचने के लिए पाठकों को बाध्य सामाजिक संस्थाएँ स्पष्ट संकेतों द्वारा विशिष्ट मूल्यों, आदर्शों के प्रति लोगों को अग्रेसर करती हैं। किंतु साहित्यकार विशिष्ट मूल्यों, आदर्शों के प्रति पाठकों को जागृत करने के लिए बिंबों, प्रतिकों, घटनाओं आदि का सहारा लेता हैं। इन्हीं के द्वारा साहित्यकार अपने भाव एवं विचार व्यक्त करता है। सामाजिक संस्थाओं के समान साहित्यकार अपने विचारों की

अभिव्यक्ति के लिए सीधा एवं स्पष्ट तरीका अपनाने की बजाय उसे साहित्यिक कला-कृति के रूप में पाठकों के सामने रखता है और वह विचार पाठकों के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालता है।

साहित्यकार व्यक्ति एवं समाज के बीच परस्पर सहयोग की भावना को उद्भूत, प्रेरित और अग्रेषित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। वह व्यक्ति और समाज के प्रति गहरा चिंतन करता है। उनकी विभिन्न समस्याओं को ज्ञात कर उसके बारे में अपने विचारों को व्यक्त करता हैं। व्यक्ति और समाज की अनेक समस्याओं को अपने साहित्य में अभिव्यंजना करते हुए अनेक समस्याओं को प्रखर वाणी देने का कार्य साहित्यकार करता है। अत: हर साहित्यकार की साहित्य-कृति में-फिर चाहे वह किसी भी विधा की कला-कृति क्यों न हो-किसी-न-किसी विचार, चिंतन, समस्या को उद्घाटित किया होता है।

डॉ० राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में विविध समस्याओं को वाणी मिली हैं। इन्हीं समस्याओं में से एक है - पारिवारिक समस्या। पारिवारिक समस्या के अंतर्गत परिवार से संबंधित अनेक समस्याओं को चित्रित किया गया हैं। अत: 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ निम्नांकित हैं।

3.2.1 पारिवारिक विघटन की समस्या :

परिवर्तनशील एंव आधुनिक समाज में सबसे बड़ी पारिवारिक समस्या है - पारिवारिक विघटन की समस्या। आर्थिक विषमता, पीढ़ी-संघर्ष, लुप्त होते मानवीय मूल्य, पारस्पारिक सांमजस्य का अभाव, विचार भिन्नता, वैयक्तिक आवश्यकताओं को सर्वोपरि मानने की बढ़ती प्रवृत्ति, परंपरा और नवीनता के मध्य पिसता व्यक्ति, विषम परिस्थितियों में समन्वय स्थापित करने में असफल पारिवारिक सदस्य आदि के कारण पारिवारिक विघटन होता हैं। दिन-ब-दिन पारिवारिक विघटन की समस्या बढ़ती ही जा रही है। पारिवारिक विघटन की समस्या के कारणों के प्रति संकेत करते हुए डॉ० एम० के० गाडगील लिखते हैं कि - "मनुष्य की अहंभावना, वैयक्तिक महत्वकांक्षा, ममत्व बुद्धि तथा व्यक्तिगत संपत्ति का मोह उसे अलग परिवार बनाकर रहने के लिए प्रेरित करता है।"[38] इस प्रकार पारिवारिक विघटन

की समस्या के विविध कारण हैं जो उत्तरोत्तर बढ़ते ही जा रहे हैं।

शंभूरत्न त्रिपाठी के मतानुसार- संयुक्त परिवार में व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुँचती है उसे किसी नई दिशा में कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं होती।"[39] इसलिए पारिवारिक विघटन आवश्यक बन जाता है। तो डॉ० मंजु शर्मा पारिवारिक विघटन को आधुनिक सभ्यता का अनिवार्य अंग बताते हुए लिखती है कि - "आधुनिक सभ्यता के परिणाम स्वरूप आदर्शों, मूल्यों, भावनाओं, विचारों आदि में द्रुतगति से परिवर्तन हो रहा है। अत: कहा जा सकता है कि आधुनिकता सभ्यता का एक अनिवार्य अंग पारिवारिक विघटन है, जिसे रोका नहीं जा सकता।"[40]

'कावेरी' उपन्यास की नायिका कावेरी है, जिसका परिवार पारिवारिक विघटन के कगार पर खड़ा है। पारिवारिक विघटन की स्थिति तब बन जाती है, जब पारिवारिक सदस्यों में अनबन होती है या संघर्ष होता है। यह द्वंद्वात्मक स्थिति मानसिक, वैचारिक, भौतिक आदि में से किसी भी स्तर पर हो सकती है, जिसके कारण पारिवारिक विघटन शुरू होता है। यह स्थिति कावेरी के परिवार में विद्यमान है।

अनु अपनी माँ कावेरी से मिलने आती है, किंतु वहाँ आने पर भी वह अपने ही काम में व्यस्त है, उसे अपनी माँ के लिए समय नहीं है। वह सुधि को माँ की देखभाल करने के लिए कहकर अपने पति के पास शीघ्र की लौट जाती है। अत: अनु और कावेरी-बेटी और माँ के बीच दूरी हैं। कावेरी का बेटा शांतनु अपनी पत्नी के साथ अलग घर-गृहस्थी बसाकर रहता है। शांतनु के परिवार में कावेरी के लिए कोई स्थान नहीं है। शादी से पहले शांतनु कहा करता था कि - पढ़ाई खत्म करने के वाद बढ़िया-सी नौकरी, ठाठ, रोव-रूतवा हमारे पास होगा और माँ तुम बस बहू पर हुकुम चलाना, किंतु यह कावेरी के नसीब में कहाँ ? शांतनु की शादी के वाद बहू घर में आते ही परिवार में दरारें पड़नी शुरू हो गई। इसके वारे में कावेरी अपनी डायरी में लिखती है - "हूँ ! आ गयी वहू, चला लिया हुकुम और कर लिया ठाठ, पता नहीं आजकल की छोकरियाँ कौन-कौन-सी किताबें पढ़कर आती है कि घर में कदम रखते है दरारें शुरू ! घर न हुआ कुरूक्षेत्र का मैदान हो गया।"[41]

कावेरी बिना बुलाये शांतनु के घर कभी नहीं गयी, जब शांतनु के खत बार-बार आने लगे तब वह उसके घर गयी। तभी कावेरी ने बहू को शांतनु से कहते सुना कि - माँ जी कब तक यहाँ रहनेवाली है मुझे भैया के पास जाना है। इसी बात पर नाराज होकर कावेरी अपने घर लौटी और कभी भी अपने बहू-बेटे के घर वापस नहीं गयी। शांतनु ने भी इस बात पर न कुछ कहा और न माँ को रूकने को कहा। कावेरी लिखती है - " निहायत मासूम-सी तमन्ना थी, बहू कम से कम एक प्याला चाय तो पिलायेगी। बहू आ तो गयी पर चाय पीने-पिलानेवाली बात मन की मन में ही रह गयी। अरे भई ! तुमसे यह उम्मीद न करूंगी तो और किससे करूंगी? बहुत जल्द ही जान गई कि किसी के घर मेरे लिए इंच भर भी जगह नहीं है।"[42] इस तरह कावेरी और उसके बहू-बेटे के बीच दरारें पड़ती गयी है। कावेरी के माता-पिता का परिवार और उसके पती का परिवार भी उसे अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं। इस प्रकार कावेरी का परिवार विघटित हो चुका है।

कावेरी की सहेली सुधि का परिवार भी विघटन की ओर उन्मुख है। सुधि और उसके पति रवि के बीच मानसिक स्तर पर विघटन मौजूद है। सुधि अपने पती के संदर्भ में उर्मि को लिखती है कि - "जितनी देर घर-से बाहर रहता है-राहत सी मिलती है और लौटने पर मौत जैसा सन्नाटा छाने लगता है।शमशान में घर बसाने जैसी बात हो जाती है। आमना-सामना हो जाने पर एक दूसरे से कतराने लगते हैं।"[43] इससे पता चलता है कि सुधि और रवि के मध्य दूराव है, जिसके कारण परिवार में मानसिक स्तर पर ही क्यों न हो विघटन है। सुधि अपने परिवार में अजनबी पन महसूस करती हुई अपने परिवार के विघटन की ओर संकेत करती हुई लिखती है - "जिस तरह हम लोग अजनवियों की तरह एक ही छत के नीचे रहते हैं उसे देख लगता है कि बढ़ती दूरियों को कभी छू भी नहीं पायेंगे। बाहर की दूरी तो एक के चलने से ही कम हो जायेगी मगर भीतरी दूरी सबके चलने से ही कम होगी। कैसे चलेगी यह जिंदगी-सोच-सोच कर कांपने लगती हूँ।"[44] इस प्रकार सुधि के परिवार में भी विघटन बरकरार है।

अंतत: कहने की आवश्यकता नहीं कि- 'कावेरी' उपन्यास में पारिवारिक

विघटन की समस्या को मुखर वाणी प्रदान करने में लेखिका सफल हुई हैं। पारिवारिक सुख व्यक्ति के जीवन को अमृतमय बना देता है और वही परिवार विघटन की समस्या से ग्रस्त होने पर व्यक्ति के जीवन को विषाक्त बना देता है, इसी तथ्य के साथ लेखिका पारिवारिक समस्याओं को प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार पारिवारिक विघटन की समस्या 'कावेरी' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं में से एक है।

3.2.2 घरेलू कामकाज की समस्या :

प्राय: देखा जाता है कि घरेलू कामकाज की समस्या के कारण पति-पत्नी के बीच झगड़ा हो जाता है। सदियों से परंपरा या रूढ़ि चली आ रही हैं कि घर का सभी काम घर की औरते करती रहे और पति घर से बाहर का नौकरी आदि का काम किया करें पश्चिमी शिक्षा और सभ्यता के प्रभाव स्वरूप नारी नौकरी आदि काम में जुड़ गयी। अत: जिस परिवार में पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, वहाँ घरेलू कामकाज की समस्या परिवार के लिए सिरदर्द बन जाती है।

परिवार की स्त्रियाँ चाहती हैं कि जिस तरह हम नौकरी कर के परिवार चलाने में पुरूषों की मदद करते हैं, उसी तरह पुरूष भी घरेलू कामकाज में हमारा हाथ बटाए। डॉ० जे० एम० देसाई जी लिखती है कि - "जिस तरह चने अथवा सीप का आधा दल दूसरे से मिलकर पूर्ण होता है उसी प्रकार पुरूष के सामने का खाली आकाश नारी के साथ मिलने से पूर्ण होता है।"[45] अत: कहा जा सकता है कि नारी और पुरूष को एक दूसरे को मिल-जुलकर परिवार के लिए काम करना चाहिए।

'कावेरी' उपन्यास में सुधि और रवि दोनों नौकरी करते हैं। पति-पत्नी दोनों के नौकरी में होने के कारण घर का कामकाज उनकी समस्या बन गयी हैं। रवि परिवार की चिंता नहीं करता। वह अपनी पत्नी से ही जोर-जबरदस्ती से घर का काम करवाता है। नौकरी के नाम पर रवि घर से बाहर न जाने क्या-क्या करता रहता है। किंतु सुधि को अपनी नौकरी के साथ पारिवारिक कामकाज करना पड़ता है। सुधि नौकरी करके अपना परिवार चलाती है। नौकरी और घरेलू कामकाज के कारण ऊब चुकी तथा थकी हुई सुधि उर्मि को लिखती है कि

- "घर और बाहर को एक साथ ओढ़ते, बिछाते और तहाते उंगलियों की पोर-पोर दुखने लगी है।"[46]

सुधि अपने घरेलू कामकाज में हमेशा व्यस्त रहती है, जिसके कारण वह अपनी सहेलियों से मिलना तो दूर उनको खत लिखने तक के लिए समय नहीं निकाल पाती। इसके संदर्भ में सुधि उर्मि को लिखती है कि - "अब क्या बताऊँ जब-जब खत लिखने बैठती हूँ तब-तब कोई न कोई चरखा शुरू हो ही जाता है। कभी पूचू बरसात में नाव चला-चलाकर छीकने लगता है और कभी इनु रो-रोकर पूरा घर सिर पर उठा लेती हैं, कभी दूध की गंध जीना दूभर कर देती है और कभी दाल जलने की। कभी महाराज की आयी-गयी बात है तो कभी मिसरानी का बतंगड़। कभी आटे दाल का हिसाब करना है तो कभी नौकरी का।"[47] इस प्रकार सुधि के लिए घरेलू कामकाज एक समस्या बन गयी है। कावेरी भी आजीवन नौकरी के साथ-साथ घरेलू कामकाज में लगी रही है। उर्मि और अजित तथा चैती और उसका पति भी घरेली कामकाज से पीड़ित है।

अत: कहा जा सकता है कि लेखिका डॉ. राज बुद्धिराजा ने सुधि, उर्मि, कावेरी, चैती, अजित, रवि, चैती का पति इन पात्रों के माध्यम से पारिवारिक या घरेलू कामकाज की समस्या का उद्घाटन किया है। लेखिका ने सफलतापूर्वक घरेलू कामकाज की समस्या को रेखांकित किया है।

3.2.3 कामचोर पति की समस्या :

भारतीय समाज जीवन का सामान्यत: अध्ययन या सर्वेक्षण करने पर मालूम हो जाता है कि नौकरी करनेवाला पुरूष वर्ग केवल नौकरी करता है और घरेलू कामकाज अपनी पत्नी पर छोड़ देता है। किंतु नौकरी करनेवाली स्त्रियाँ अपने घरेलू कामकाज को भी संभालती है, वह भी अच्छी तरह। नौकरी करनेवाली दंपत्ति मिल-जुलकर घरेलू कामकाज करती हुई अक्सर कम पायी जाती है। प्राय: स्त्री पुरूष की अपेक्षा अधिक काम करती है। स्त्री सुबह जल्दी उठकर बच्चों और पति के लिए नहाने-खाने से लेकर दिन भर नौकरी करने पश्चात् रात देर तक बर्तन धोने तक का काम करती है। इस काम के लिए नौकर रखना उन्हें गँवारा

नहीं होता। वे ख़ुशी से काम करती है। इसकी अपेक्षा पति कामचोर होता है, जो एक समस्या बन जाती है।

सुधि नौकरी करती है, फिर भी उसका पति रवि उससे जोर-जबरदस्ती काम करवाता है। लेकिन स्वयं कामचोर है। इसके बारे में सुधि उर्मि को लिखती है कि - "... वैसे आजकल हर आदमी बैसाखियों के सहारे चलने का आदी हो गया है। रवि को ही देख लो न ! सब काम दूसरों से करवाना और जोर जबरदस्ती से करवाना। न आने की ख़ुशी और न जाने का गम। कब तक यूं ही चलता रहेगा।"[48] रवि के कामचोरपन से सुधि ऊब चुकी है।

सुधि उर्मि को बताती है कि रवि का लंबी ताने सोना और बच्चों का अगली क्लास में जाना वैसा ही चल रहा है जैसे चलता आया है। धीरे-धीरे वह भी हमारी तरह आखिरी दर्जे में पहुचेंगे और हमारी तरह की उनको भी नौकरी करना आवश्यक हो जाएगा। जब उसे अपने कामचोर पति की दुखद याद आती है तब वह कहती है - "...... क्योंकि इन्हें जिंदा रहना है और जिंदा रहने के लिए नौकरी करना ज्यादा जरूरी है। रवि की तरह सबका मुकद्दर नहीं होता कि बीवी कमाती रहे और खुद कमाने की आड़ में न जान क्या-क्या करता रहे।"[49]

इस प्रकार लेखिकाने कामचोर पति की समस्या को वाणी प्रदान की है।

3.2.4 दांपत्य-प्रेम के अभाव की समस्या :

वर्तमान समय में सभी रिश्तें-नातों के बंधन कामजोर पड़ते जा रहे है। दांपत्य-जीवन परिवार का मूलभूत आधार होता है। इसी के वलबूते पर परिवार रूपी महल खड़ा होता है, लेकिन समकालीन परिवेश पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हो जाता है कि अव दांपत्य-जीवन भी टूटता, बिखरता जा रहा है। इस संदर्भ में डॉ० पुष्पलाल सिंह का कथन द्रष्टव्य है कि - "दांपत्य संवंधों की दरार समकालीन जीवन का एक कटु सत्य है। विविध प्रकार और कारणों से आज पति-पत्नी के बीच दूरियाँ आ गई हैं, विशेषत: शिक्षित और उच्च कहे जानेवाले वर्ग की यह नियति बन गई है, किंतु फिर भी सामाजिकता के भय और सात जन्मों तक निभाई जानेवाली प्रीति के संस्कारवश स्त्री और पुरूष, पति-पत्नी के इस रिश्ते को

ढोए चले जाते है।"[50] इस प्रकार दांपत्य जीवन प्रेम के अभाव में केवल बोझ-सा बन गया है।

प्रेम मानव-जीवन का एक महत्वपूर्ण मूल्य है। परंतु आज वह केवल थकान मिटाने का साधन बनता जा रहा है। प्रेम भावना स्वार्थ, वासना, आदि से मुक्त होने के कारण वह कलूषित बनती जा रही है। डॉ० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय जी वर्तमान प्रेम संबंधों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि - "अब प्रेम संबंधों में भी स्वार्थ, वासना, उद्देश्य तथा अपने-अपने व्यक्तित्वों के परस्पर उन्मीलन की सफलता या असफलता लक्षित होती है।"[51] अत: प्रेम संबंध टूटते जा रहे है।

सुधि, उर्मि, कावेरी अपने पति के प्रेम से वंचित स्त्रियाँ हैं। कावेरी को उसके पति ने त्याग दिया है। लेकिन सुधि और उर्मि दोनों अपना दांपत्य-जीवन व्यतीत कर रही हैं, फिर भी वे दोनों पति का प्रेम पाने में असफल हैं। सुधि इस व्यथा को उर्मि को लिखती है कि - उर्मि तुम्हें भी मेरी तरह लगता होगा कि चाँदनी गोरे बदन पर आकर ठहरे और कोई तुम्हें लगातार देखता रहे। लेकिन यह अपने नसीब में कहाँ ? चाँदनी ऊपर ही ऊपर से चली जाती है। चाहती हूँ कि वह ठहर जाये और पल भर ही सही कोई मुझे देखले। चाहे बाद में वह कहीं भी चली जाये और हम उसका नाम पुकारते रहे। पति है कि उसे उसे कुछ लेना-देना नहीं। पति के प्रेम से वंचित सुधि अपनी विवंचना को उर्मि को इन शद्बों में लिखती है - "तुम, हम, कावेरी दी सभी तो खुशी बिखरने में लगे रहते हैं - मगर बटोरने वाला है कि कोई उसका ठौर-ठांव नहीं है। हम सब इसी इंतजार में हैं कि काँटों वाली बेचैनी से आसपास शबनमी चादर बिछ जाये-और अंजलि भर-भर किसी की नींद छिनती रहे। मगर ऐसा होता नहीं न ! शबनम बिखरते-बिखरते अपनी पलकों की नींद छिन जाती है और सामने वाले को देखने की सुधि नहीं रहती।"[52]

दांपत्य-जीवन में शारीरिक संबंध को महत्व दिया जाता है। वह प्रेम जी-जान से हो यह आवश्यक नहीं है, किंतु जिस्म से प्रेम होना आवश्यक है। दांपत्य जीवन में पत्नी का स्थान पत्तल के समान होता है, जो भूख होने पर मुँह से लगा ली और भूख मिटने पर फेंक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

दी। अनु और उसके पति के बारे में सोचते हुए दांपत्य-प्रेम पर सुधि प्रकाश डालती है - "दोनों जब साथ रहते हैं तो एक-दूसरे को प्यार भी करेंगे ही। जान से करें या न करें जिस्म से तो करेंगे ही। यह जिस्म की गंध भी अजीब होती है। हर गंध से अलग। भूख खत्म हुई और पत्तल लगाने और फेंकने वाली बात जिंदगी भर चलती रहती है। यदि यह फेंकनेवाली बात न होती तो जिंदगी वहीं थम जाती।"[53] इस प्रकार दांपत्य-जीवन में विशुद्ध प्रेम की अपेक्षा शारीरिक संबंधों की अधिकता दिखाई देती है।

अंत में कहा जा सकता है कि 'कावेरी' उपन्यास में दांपत्य-जीवन में विशुद्ध प्रेम के लिए तरसती स्त्रियों का चित्रण कर लेखिका ने दांपत्य प्रेम के अभाव की समस्या से बखूबी से पाठकों को परिचित कराया है।

3.2.5 बच्चों के नामकरण की समस्या :

बच्चों का नामकरण करना एक बड़ी समस्या है। नवजात शिशु को परिवार द्वारा जो नाम प्राप्त होता है, वह उसे आजीवन अपनी पहचान के तौर पर प्रयुक्त करता है। किंतु आज के युग में परिवार द्वारा प्राप्त नाम को त्याग कर स्वेच्छा से नाम प्रचलन में लाने की प्रवृत्ति युवकों में पाई जाती है। नाम क्या हो ? कैसा हो? और नामकरण कौन करेगा ? आदि नामकरण से संबंधित समस्याएँ हैं, जिसके कारण परिवार में तनाव पैदा होता है।

कावेरी की सहेली चैती एक गँवार औरत है। उसके गाँव में जेठी-सावनी, सूरजी-चाँदनी जैसे ही नाम रखे जाते हैं। चैती का जन्म चैत्र मास में होने के कारण उसका नाम चैती रखा गया था। जब वह शहर आती है तो उसके नाम पर सभी हँसने लगे और उसे चिढ़ाने लगे। चैती मानती है कि अगर यह किसी मेम का नाम होता तो उसे सब लोग 'क्या बढ़िया नाम है' कहकर सराहते। 'जैम्बी', डिक्की' यह क्या बच्चों के नाम होते है? मानो बच्चे न होकर कुत्ते के पिल्ले हो। कावेरी की दादी ने वेद, पुराण, रामायण, महाभारत पढ़कर कावेरी का नामकरण किया था। दादी ने पोती की मंद-मंद मुस्कान देख कर उसका नाम कावेरी रखा होगा और सोचा होगा बड़ी होकर नदी-सी कल-कल करती रहेगी। लेकिन यह कावेरी के जीवन में संभव न हो सका।

कितने ही प्यार-दुलार से नाम रखकर माता अपने बच्चों की पहचान दुनिया से कराती हैं। किंतु कावेरी के परिवार में कावेरी के बेटे के नामकरण के समय जो समस्या निर्माण हुई उसके बारे में चैती सुधि को बताती है कि - "कितना बड़ा हादसा हो गया था जब कावेरी ने बेटे का नाम अपनी मरजी से रखा था। जात-बिरदारी, सगे-संबंधी जब जग गए थे। पण्ड़ितजी के पूछने पर वह अड़ गई थी -

"नाम शांतनु ही होगा

दाये-बांये, आगे-पीछे देखे बगैर मियाँ चिल्ला पड़ा था -

'रंड़ी ! रख ले यही नाम' "[54]

इसी के साथ कावेरी के पति ने बच्चे को खिलौने के समान जमीन पर पटक दिया, जो कई दिन अस्पताल में रखने के बाद होश में आ गया।

कावेरी को अपने बच्चे का नामकरण करने का अधिकार तक प्राप्त न हो सका। इसकारण बच्चों के नामकरण की समस्या का सामना उसे करना पड़ता है। चैती इस संदर्भ कहती है - "कौन जमीन जायदाद लुटा दी थी - नाम ही तो रखा था। खुशी के मौके पर यूं भरे वाजार में बीवी को रंड़ी कहा जाता है क्या ? कावेरी की जगह मैं होती न, बनकर दिखाती। हरामजादे को लाइन में खड़ा करती और एक बार के हजार रूपये लेती।"**55** इस प्रकार कावेरी को बच्चे के नामकरण की समस्या के कारण कठीनाई का सामना करना पड़ता है और परिवारवालों का गुस्सा सहना पड़ता है।

इस प्रकार लेखिका ने 'कावेरी' उपन्यास में परिवार में नामकरण को लेकर उठनेवाली समस्या को चित्रित किया है। इस समस्या के कारण परिवार में आप-सी संबंधों में दरार पड़ने में भी कोई कसर नहीं रहती।

3.2.6 शिष्टाचार की समस्या :

शिष्ट आचरण या सभ्य आचरण ही शिष्टाचार कहलाता है। अतिथि, सगे-संबंधियों, पास-पड़ोसियों से किया गया सभ्य आचरण शिष्टाचार होता है। पाश्चात्य संस्कृति और शिक्षा से प्रभावित लोग शिष्टाचार के मानदण्ड भारतीय संस्कृति से भिन्न मानते

है। गाँव और शहर के शिष्टाचार के मानदंड अलग-अलग होने के कारण भी शिष्टाचार की समस्या पैदा हो जाती है।

सुधि युनिवर्सिटी लेक्चर कॉलोनी में कावेरी के पड़ोस में रहने आती है। तब कावेरी सुधि के परिवार के लिए पराठा-कॉफी, दुध-कार्नफ्लेक्स और फाइव स्टार लेकर उसके घर जाती है। कावेरी अपना शिष्टाचार निभाती है। सुधि कावेरी को अपने साथ कुछ खाने के लिए नहीं कहती। वह सोचती है - "बेतकल्लुफी से जब उन्होंने एक सिप ले लिया तब याद आया कि शिष्टाचार वश उन्हें साथ देने के लिए भी नहीं कहा। सोचती होंगी कैसा फूहड़ से पाला पड़ा है। महानगरों में रहकर भी सलीके से दुआ-सलाम करना नहीं आया।"[56] इसप्रकार सुधि के लिए शिष्टाचार एक समस्या बन जाती है, जब वह अपने घर आयी कावेरी को अपने साथ खाने का आग्रह करना भूल जाती है।

कावेरी सुधि के बेटे-पूचू के जन्मदिन पर छोटे से पैकेट में उपहार और आशीर्वाद-प्यार देती है। कावेरी सुधि से कहती है - "बहुत से उपहार ऐसे होते हैं सुधि, जिनका कोई आकार नहीं होता। आशीर्वाद-प्यार जैसे आकारहीन उपहारों को भला कोई क्या देखेगा? "[57] जब पूचू पैकैट खोलता है तो उससे सोने की चेन निकलती है। कावेरी के पास पैसे न होने पर भी वह शिष्टाचार वश पूचू को सोने की चेन देती है, लेकिन खुद की बेटी अनु का जन्मदिन वह नहीं मना पाती।

इस प्रकार लेखिका ने परिवार के सदस्यों को शिष्टाचार किस तरह निभाना पड़ता है, इसका चित्रण किया है। परिवार को पास-पडोसियों, सगे-संबंधियों से शिष्टाचार निभाने के लिए किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वही जानती है।

3.2.7 पति-पत्नी के झगड़े की समस्या :

पाश्चात्य सभ्यता, शिक्षा का प्रभाव एवं आधुनिकीकरण के कारण पारिवारिक रिश्ते-नाते संघर्ष से घिर गए हैं। परिवार को बनाए रखनेवाला महत्वपूर्ण रिश्ता है - पति-पत्नी का। अविश्वास, यौन संवंध, वासना, प्रेम का अभाव, तिसरे व्यक्ति का आगमन

आदि कारणों से पति-पत्नी के बीच संघर्ष छिड़ जाता है, जो एक समस्या बन जाती है। इसके परिणाम स्वरूप परिवार में तनाव हमेशा बना रहता है।

डॉ० प्रभा वर्मा ने स्त्री-पुरूष के बीच तनाव के कारणों पर दृष्टिपात करते हुएं लिखा है कि - "स्त्री-पुरूष के मध्य तनाव का कारण सदैव तीसरा आदमी रहा है।"[58] यह बात कावेरी और उसके पति के संदर्भ में सही मालूम पड़ती है, क्योंकि जब कावेरी के बचपन के प्रेमी का कावेरी के पति को पता चलता है, तभी उनके बीच झगड़ा शुरू हो जाता है। बच्चे का नामकरण को लेकर बी उनके बीच झगड़ा होता है। इन सभी झगड़ो का अंतत: परिणाम यह होता है कि कावेरी का पति कावेरी को त्याग देता है।

सुधि अपने पति के झगड़े से संत्रस्त है। वह उर्मि को पड़ोस के चाचा के घर में होने पति-पत्नी के झगड़े की याद दिलाती हुई लिखती है - "याद है न तुम्हें 'दारयादीनपनाह' वाले चाचा जान की। गरम होने पर कटोरी-कलछी से लेकर बेलन-बुहारी तक फेंकने लगते थे और उनके सुर के साथ-साथ बहु-बेटियों का सुर जब ताल देने लगता था तब मिट्टी से लिपा-पुता आंगन भी सिसकने लगता था और उसकी आवाज तब तक गूंजती रहती थी जब तक बरतनों की 'एक और शाम' जवान नहीं होती थी।"[59] इस प्रकार सुधि के पड़ोसवाले चाचा के यहाँ भी पति-पत्नी का झगड़ा होता रहता था।

उर्मि का पति अजित भी उर्मि से छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ता रहता है। सुधि उर्मि को खत लिखते समय अजित के बारे में लिखती है कि- "मेरी तरफ से उसको कह दो कि यदि मिजाज बिगाड़ना जिंदगी के लिये निहायत जरूरी है तो कुछ बड़ी-बड़ी बातों को लेकर बिगाड़े। यूं छोटी-छोटी बातों पर क्या गरम-ठंड़ा होना।

'खाना परोसते वक्त तुमने चपाती अपनी प्लेट में पहले क्यों रक्खी ?'

'सब्जी कम क्यों बना दी ?'

'तुम्हारी वो वाली सहेली इतनी देर क्यों बैठी रही ?'

'बिना पूछे यह वाली साड़ी क्यों पहन ली ?'

'रिंकू के लिये चाबीवाला खिलौना क्यों लायी ?"[60]

इस प्रकार अजित छोटी-छोटी बातों को लेकर पहाड़ बना देता है, जिसके कारण उर्मि और अजित के बीच झगड़ा होता है।

अंतत: लेखिका ने सुधि-रवि, उर्मि-अजित, कावेरी उसके पति के मध्य के संघर्ष को अभिव्यंजना प्रदान की है। पति-पत्नी का किसी हद तक का झगड़ा उनके वैवाहिक जीवन को मधुर बनाता होगा, किंतु उस हद से गुजरा झगड़ा पति-पत्नी के रिश्ते में दरार पैदा कर देतं है और बच्चों पर बुरा असर डाल जाता है। इसी कारण पति-पत्नी का झगड़ा परिवार के लिए समस्या बन जाता है।

3.2.8 शरारती बच्चों की समस्या :

बच्चों के बिना परिवार की कल्पना करना याने पागल का प्रलाप होगा। जिस घर में बच्चे न हो वह घर सूना-सूना लगता है। बच्चों से ही घर की रौनक बनी रहती है अगर वे बच्चे शरारती हो तो परिवार के लिए समस्या हैं। प्राय: बच्चे शरारती होते ही है। इस वजह से परिवार की समस्या बढ़ जाती है।

बच्चें परिवार की अगली पीढ़ी होते हैं, परिवार का भविष्य होते हैं। बच्चे बिगड़ जाने पर परिवार का विकास खतरे में आ जाता है। सुधि मानती है कि बच्चों के लिए पिता का होना आवश्यक होता है, लड़कों के लिए खास तौर पर। सुधि का बेटा पूचू पिता के छत्रछाया के अभाव में बिगड़ चुका है। वह गली-गली के ग्वालिनों की बातें करता हैं। अगर उसे ठोकर खाने से न बचा लिया तो दुनिया में ठोकरें खाने के लिए ईट-पत्थरों की कमी न्हीं है। सुधि पूचू की शरारतों पर दृष्टिपात करते हुए लिखती है कि - "इधर पूचू बहुत शैतान हो गया है। पढ़ने-लिखने के नाम पर 'इल्ले-इल्ले' और मटरगश्ती के नाम पर कॉलोनी के बच्चों के साथ 'ए' से 'जैड़' तक के घरों मे झाक आयेगा।"[61] इस प्रकार सुधि के बच्चों की शरारत उसके लिए समस्या बन गयी है।

कावेरी की सहेली चैती गंवार औरत है। वह मानती है कि बच्चों को असमय बूढ़ा बनाने की अपेक्षा उन्हें खेलकूद, शरारत करते रहना चाहिए। चैती अपने बचपन की शरारतों को सुधि को बताती है। वह कहती है - "आजकल वे बच्चे भी क्या शरारत करेंगे

जो हमने की थी। खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई के लिए घड़ी की सुई को आगे-पीछे घुमाना मामूली बात थी। कभी-कभी आने-जानेवालों की रेलगाड़ी छूट जाती थी। उसके बाद जो धुनाई होती थी-पूछो मत !अपनराम हिम्मत हारनेवाले नहीं थे। बड़े-बड़े झुमके पहनेवाली उस्तानीजी को वह छकाते, वह छकाते कि जहाँ कहीं भी होंगी-आज भी याद करती होंगी।"[62] इस प्रकार बच्चों की शरारत के कारण परिवालों के साथ-साथ अन्यों को भी कठीनाई का सामना करना पड़ता है।

कहने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती कि शरारती बच्चे परिवार के लिए समस्या पैदा कर देते हैं। जिस परिवार में बच्चे अच्छे गुणों से संपन्न होते है, वह भविष्य में परिवार को प्रगति के पथ पर अग्रेसर करते हैं और जो इन गुणों से विहीन होते है वे परिवार को विनाश की ओर ले जाते हैं।

3.2.9 घर बनाने की समस्या :

मनुष्य की प्रमुख तीन आवश्यकताएँ हैं - रोटी, कपड़ा और मकान। मकान चार दीवारों और एक छत से बनाया जा सकता है, किंतु उसे घर बनाने के लिए जी-जान से कोशिश करनी पड़ती है। घर-परिवार के सुख की महत्ता डॉ० राधा गिरधारी इन शब्दों में अंकित करती हैं - "परिवार मानव-जीवन की आधारशीला है। सुबह घर से निकला हुआ व्यक्ति दिनभर कार्यरत क्लांत शिथिल होकर संध्या समय जब घर लौटता है, तो उसे अपने परिवार में ही शांति-सुख का आभास मिलता है। पारिवारिक व्यक्तियों का पारस्पारिक माधुर्य पूर्ण व्यवहार पारिवारिक संबंधों को सुदृढ एवं सौहार्दपूर्ण बनाता है।"[63] अत: घर पारिवारिक सुखों की वनस्थली है, जहाँ पर व्यक्ति अपने दुखद कष्टों को भूलकर स्नेह-संबंधियों से सुख-संस्पर्श की कामना निसंदेह कर सकता है।

कावेरी को पति ने त्याग देने पर उसका घर तिनके की भाँति बिखर गया है। वह जैसे-तैसे मकान तो बनाने में सफल हो जाती है, किंतु उसे घर बनाने में सफलता प्राप्त नहीं कर पाती। वह घर की तलाश में निकल जाती है। सुधि कावेरी के चले जाने पर कहती है - "उस दिन मुझे लगा था कि घर और मकान की दूरी पाटना इतना आसान नहीं है जितना

BARR. ... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

समझा जाता है। मकान तो मेहनत से वनाया जा सकता है, मगर घर में मेहनत के पैर नहीं टिकते । वनाते-वनाते आदमी खत्म हो जाता है, मगर घर है कि वनने नाम नहीं लेता। उस दिन मैंने भगवान से यही माँगा था कि कावेरी दी को घर मिल जाये वह घर जिसे उनके वच्चों ने भी बनाने की कोशिश नहीं की।"[64] इस प्रकार कावेरी अपने घर की खोज में दर-दर भटकती है, किंतु घर उसे अप्राप्य रहता है।

अत: मकान को घर बनाते-बनाते आदमी की जिंदगी खत्म हो जाती है लेकिन घर बनाना बहुत मुश्किल बन जाता है। घर बनाने की समस्या दिन-ब-दिन कठिन बनी है और परिवार के सदस्यों में आप-सी दूरी बढ़ती जा रही है।

3.2.10 बच्चों के शिक्षा की समस्या :

बढ़ती मँहगाई के कारण बच्चों को शिक्षा दे पाना हर माता-पिता को संभव नहीं होता हैं। कॉंव्हेंट की शिक्षा देना तो उससे बी कठिन बनता जा रहा है। अपनी आर्थिक स्थिति को देखकर लोग बच्चों को कारपोरेशन के स्कूलों में भर्ती करवाते है। इन स्कूलों में बच्चों को न जाने कितनी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सुधि अपने बच्चों को शिक्षा देने में असमर्थ पाती है। उसका पति रवि अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदारी को निभाने से टाल-मटोल करता है। इस संदर्भ में सुधि लिखती है - "पूचू-गुड्डू को कारपोरेशन के स्कूल में दाखिल करवा दूँ। टाट पर बैठे-बैठे पसीना-पसीना होते रहेंगे। ज्यादा से ज्यादा यही होगा न कि अनपढ़ रह जायेंगे-तो रहें-अपनी वला से। बच्चे सिर्फ मेरे ही नहीं, रवि के भी हैं।"[65] इस प्रकार सुधि के परिवार के लिए वच्चों की शिक्षा एक समस्या वन जाती है।

कावेरी से मिलने उसकी भूतपूर्व छात्रा पम्मी आती है, जो अव विवाह करने जा रही है। उसे देखकर सुधि उन वच्चों के वारे में सोचती है, जो शिक्षा के नाम पर माता-पिता का पैसा वरवाद करते हें, किंतु पम्मी ऐसी नहीं है। सुधि उर्मि को लिखती है कि - "भला कोई पूछे ! पढ़ना नहीं है मत पढ़ो। माँ-बाप का पैसा काहे बरवाद करते हो भाई ! समझते है, माँ-वाप कौन-सा एहसान कर रहे हैं। पैदा किया है तो पालें भी मगर यह पम्मी

ऐसी नहीं है।"[66] इससे उन बच्चों की शिक्षा की समस्या को लेखिका ने उठाया हैं, जो शिक्षा के नाम पर मात्र मटरगश्ती करते रहते हैं।

इस प्रकार लेखिका ने आर्थिक अभाव में उचित शिक्षा नहीं पाते और आर्थिक दृष्टि से समर्थ होने के बावजूद जो पढ़ना नहीं चाहते, इन दोनों तरह के बच्चों की शिक्षा की समस्या को अंकित किया है।

3.2.11 परिवार के प्रति समर्पित पत्नी की समस्या :

विवाहोपरांत नववधू परिवार में प्रवेश करते समय अपने साथ समर्पण की भावना लेकर ही प्रवेश करती है। पत्नी अपने परिवार को अपने त्याग द्वारा खुश रखना चाहती है। वह त्याग की प्रतिमूर्ति होती है। इसके बारे में डॉ० रमेश देशमुख लिखते हैं - "भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी पत्नी, वात्सल्यमयी माता और ममतामयी बहन के रूप में चित्रित किया गया है। वह स्वयं त्याग की मूर्ति है।"[67] अत: नारी अपने पत्नी रूप में परिवार के लिए अपने सुख-दुख को भूलकर परिवार के सुखों के प्रति सोचती रहती है।

सुधि, कावेरी, उर्मि अपने परिवार के लिए समर्पण, त्याग करती रही है। सुधि नौकरी करके अपने परिवार को चलाती है। घर-बाहर के काम करते-करते उसके उंगलियों की पौर-पौर पीड़ा-वेदना से टिसती है। सुधि कावेरी की तरह अपने परिवार को बनाने में स्वयं को खत्म करती जा रही है। अपने परिवार के लिए सुधि ने वसंत-पतझड़, चाँदनी-दोपहरी के न जाने कितने पल सहे हैं। सुधि लिखती है - "कई बार सोचती हूँ 'मालकीन' का खिताब लेने के लिये कैसे दिन को दिन और रात को रात कह दिया जाये।"[68]

उर्मि भी अपने परिवार के प्रति समर्पित है। वह अपने परिवार को बनाने में लगी है, तो उसका पति अजित परिवार की जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लेता है। उसके बारे में सुधि लिखती है - "खैर ! किसी के हिस्से काटने का काम आता है और किसी के हिस्से बोजने का। कब तक बीजती रहेगी उर्मि ? तुम्हारी कितनी कोशिश रहती है कि घर के पौधे की नन्हीं-सी कोपल भी न मुरझाये। कैसे हो पाता है यह? जब एक आदमी सींचने और दूसरा उखाड़ने में लगा रहे।"[69] इस प्रकार एक पत्नी अपने परिवार के लिए समर्पित है, जब कि

उसका पति गैर जिम्मेदार है।

अत: लेखिका ने गैरजिम्मेदार पति के कारण पत्नी को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वह परिवार के प्रति समर्पित पत्नी की समस्या बन पाती है।

3.2.12 टूटते दाम्पत्य-जीवन की समस्या :

दंपत्ति के मध्य निरंतर बढ़ते असंतोष के कारण दांपत्य-जीवन टूटता जा रहा है। उनकी सुख-शांति विहीन जीवन उन्हें एक-साथ रहने नहीं देता। इस संदर्भ में एक कथन द्रष्टव्य है - "दांपत्य-विषयक पुराने मूल्यों के विघटन, अपनी-अपनी अस्मिता और अहं को महत्व देने की प्रवृत्ति, भौतिक सुखों, विशेषकर शरीर-सुख के पीछे भागने की विवेकहीन ललक आदि ने महानगरीय दांपत्य जीवन को दिशा-हीनता और भटकाव का शिकार बना दिया हैं।"[70] इसी कारण दांपत्य-जीवन टूटता जा रहा है, जो परिवार के लिए समस्या बना है।

समकालीन समय में सबसे अधिक परिवर्तन पति-पत्नी के संबंधों में आ रहा हैं। समकालीन दांपत्य-जीवन की सटीक व्याख्या डॉ० पुष्पलाल सिंह इन शद्बों में करते हैं - "दांपत्य संबंधों में तुर्शियों अलगाव और रिक्तता की चरम परिणति दांपत्य के बिलकुल टूट जाने में ही होती है। पति-पत्नी संबंधों का यह अलगाव कभी-कभी कानूनी रूप ले लेता है तो कभी बिना किसी कानूनी कार्यवाही और औपचारिकता के भी दोनों पूर्णत: संबंध विच्छेद कर लेते हैं।"[71]

सुधि का पति रवि उससे हमेशा झगड़ा करता है। रवि केवल अपने व्यक्तिगत बातों को लेकर ही सोचता है। अपने पत्नी और बच्चों के प्रति कोई जिम्मेदारी वह नहीं निभाता। सुधि लिखती है - "मैं ही कब बता सकती हूँ कि रवि मेर लिए है या नहीं? मेरे लिये न जीकर वह अपने लिये जीता है। क्यों जिंदगी गुजारी जाये उस आदमी के साथ जो सिर्फ अपने लिये चक्की पीसता है।"[72] अत: सुधि और रवि का दांपत्य-जीवन टूटने को कगार पर है।

उर्मि का पति अजित उर्मि से छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ता है, जिससे

उनका दांपत्य जीवन भी टूटता जा रहा है। कावेरी के ससुरालवाले उसका शोषण करते है, तो पति उसको पीटने में मर्दानगी मानता है। शादी से पहले कावेरी ने अपने पति के रूप में स्वप्न देश के राजकुमार की कल्पना की थी। लेकिन उसे मिला धरती का राजकुमार जो बात-बात पीटता है। बाद में पति कावेरी को त्याग देता है, जिससे उनका दांपत्य-जीवन टूत जाता है।

इस प्रकार लेखिका ने टूटते दांपत्य-जीवन का यथार्थ की पृष्ठभूमी पर चित्रण कर समसामायिक जीवन के प्रति अपनी सजगता का प्रमाण दिया है।

3.2.13 पारिवारिक जिम्मेदारी की समस्या :

पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाना बड़ी कठिणाई का काम होता है। जिम्मेदारी के बोझ के तले आदमी दब कर अपना जीवन ज्ञापन करता रहे, यह मनुष्य-जीवन का कटू यथार्थ है। सच तो यह भी है कि पारिवारिक जिम्मेदारी किसी न किसी को हर हाल में उठाती ही पड़ती है।

सुधि के गैरजिम्मेदार पति के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी सुधि को उठानी पड़ती है। रवि को परिवार की चिंता नहीं है। सुधि परिवार की जिम्मेदारी को निभाते-निभाते थक चुकी है। वह कहती है कि मैं ही कब तक चिंता का पहाड़ ढोती जाऊँगी। जिम्मेदारियों के बोझ के तले दबते जाना सुधि की आदत बन गयी है, जिसके कारण सुधि को न जागते चैन मिलता है, न सोते। अपनी जिम्मेदारी और बच्चों की बेफिक्रि के बारे में सुधि लिखती है - "सब बच्चों की तरह वह भी सज-संवर लेगा, नाच कूद लेगा। बाकी रूपये-पैसे की बात तो हमें सोचनी है, जिन्होंने पैदा किया है। अच्छा है जितनी उमर बेफिक्री में गुजर जाये, बाद की ज़िंदगी तो फिक्र का पहाड़ ढोने में गुजर जाती है।"[73] इस तरह परिवार की जिम्मेदारी समस्या बन जाती हैं।

कावेरी के पति ने त्याग देने पर कावेरी अपने बच्चों की शिक्षा, शादी की जिम्मेदारी पति की अपेक्षा पत्नी उठाती है तो और भी अधिक जटिल समस्या बन जाती है।

अत: पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाना जटिल समस्या है और अगर यह जिम्मेदारी पति की अपेक्षा पत्नी उठाती है तो और भी अधिक जटिल समस्या बन जाती है।

3.2.14 पिता के प्रेम से वंचित बच्चों की समस्या :

सुधि अपने बेटे पूचू की शरारतों और बिगड़ते चले जाने के कारण संत्रस्त है। पिता के प्रेम के अभाव के कारण पूचू दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है। सुधि लिखती है - "बच्चों के लिये उसके बाप का होना बहुत जरूरी है - खासकर लड़कों के लिए। मगर मैं कहाँ से पकड़कर लाऊ ? कैसे कहूँ रवि से कि उसके भीतर का बाप मर रहा है। कहने से क्या वह सुनेगा? बह नहीं जानता कि उसका बेटा गली-गली की ग्वालिन की बात करने लगा है?"[74] इस तरह पिता के प्रेमाभाव में पूचू बिगड़ जाता है, लेकिन रवि को इससे कुछ लेना-देना नहीं है।

सिन्हा साहब अपने बच्चों को आफिशियल लेटर की तरह खत लिखते थे। हॉस्टल में रहते अपने बच्चों को सिन्हा साहब जब खत लिखवाते थे तब उनके दस्तखत ही केवल बच्चों को देखने को मिलते थे, बाकी सब पी० ए० ही टाईप कर देता था। सिन्हा हाथों से चिट्ठी लिखने के लिए न समय देते थे, न उससे कुछ फायदा उन्हें दिखाई देता था। सुधि उनके बारे में लिखती है - "बच्चों की फरमायशी चिट के जवाब में उनका सेक्रेट्री खरीदारी के लिए चल देता। बच्चों की जरूरत न हुई ईट-पत्थर की सौदेबाजी हो गयी। बाद में यदि बच्चे भी इसी तरह की सौदेबाजी करने लगे तो कैसा लगेगा?"[75] अत: पिता के प्रेम से वंचित बच्चे भी अपने पिता के प्रति आदर नहीं रखते।

कावेरी के बच्चे भी अपने पिता के प्रेमाभाव में पले हैं। इसी कारण वे कावेरी के पति के प्रति कोई प्रेम या लगाव नहीं रखते हैं। खुद कावेरी अपने माता-पिता के प्रेम से वंचित रही है।

अत: पिता के प्रेम से वंचित बच्चे प्राय: विगड़ जाते है। इसी समस्या को लेखिका ने बखूवी से 'कावेरी' उपन्यास के द्वारा उदघाटित किया है।

3.2.15 माता-पुत्री संबंधों के दूरियों की समस्या :

जिस तरह पिता की प्रतिकृति बेटा होता है, उसी तरह माता की प्रतिकृति बेटी होती है। माता की अधूरी इच्छाएँ बेटी के जीवन में भी अधूरी रहे, यह शायद ही कोई माँ

चाहती हो। किंतु जब माता-पुत्री के मध्य दूरियाँ आ जाती है, तो वह समस्या बन जाती है।

कावेरी की वेटी अनु अपने पति के साथ रहती है। जब वह कावेरी से मिलने आती है, तो कावेरी उसके आने की खुशी में खूब तैयारी करती है। उसके जीवन में रंग भरने लगता है, चेहरे पर आनंद के कारण गुलाबी रंग बिछ जाता है, किंतु अनु आने पर कावेरी के लिए समय न दे पा रही थी। वह अपने ही काम में लगी रही। इस बारे में सुधि लिखती है - "माँ है कि इंतजार का आसमान सिर पर उठाये डोलती फिरी थी और बेटी को जरूरी काम से फुरसत नहीं। वह क्या जाने कितनी अकेली पड़ गयी है उसकी माँ? थके-थके पैरों को सहलाने वाला नहीं।"[76] इस प्रकार अनु और कावेरी के बीच दूरियाँ आती रहीं। इसकी हद तब और भी अधिक बढ़ी जब कावेरी की खाली पर्स अनु का जन्मदिन नहीं मना सकी, किंतु कावेरी की आँखों में स्नेह जो अनु के लिए था, वह उसे नहीं देख सकी।

कावेरी की माँ से कावेरी ने थोड़ी-सी चीनी जब खाने के लिए माँगी, तो कावेरी की माँ ने उसे ऐसी मार-मारी की उसे सिर से खून निकल आया और वह बेहोश हो गयी। ऐसे तैसे वह बच गयी। कावेरी की माँ से कावेरी को कभी प्रेम न मिल सका। मास्टरनी जी ने कावेरी को चूहे वाली कोठरी में बंद कर दिया और कावेरी बेहोश हो गयी। जब कावेरी को होश आने पर उसने माँ को देखा तो वह फिर बेहोश हो गयी। इसके बारे में चैती कहती है - "बेहोश कावेरी को किसी तरह होश में लाया गया-मगर माँ की सूरत देखते ही फिर से वेहोश हो गई। उसे माँ से बहुत डर लगता था। शादी के बाद भी वह खुद को माँ के सामने नहीं खोल सकी। जैसा भी होता रहा ...... पीती रही।"[77] इस तरह कावेरी और उसकी माँ के बीच दूरियाँ बढ़ती रही।

अंतत: कहने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती की लेखिका ने समसामायिक परिवेश में माता-पुत्री संबंधों में आ रहे परिवर्तन पर प्रकाश डाला है और उनकी समस्याओं को चित्रित किया हैं।

3.2.16 माता-पुत्र संबंधों की समस्या :

नारी का सबसें आदरणीय रूप अगर कोई है, तो वह है माता का। किंतु

परिवर्तनशील माता-पिता एवं परिवार से लगाव कम हो रहा है। डॉ. मंजु शर्मा बच्चों के पारिवारिक प्रेम या लगाव के बारे में लिखती है कि - "बड़ो का व्यवहार ही जब संबंधों के समाप्त होने का संकेत देता है, तो उन बच्चों से जो शुरू से ही अलग हैं, किसी तरह के लगाव या पारिवारिक प्रेम की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।"[78]

शांतनु शादी के पहले कावेरी को कहता था कि शादी के बाद तुम बहू पर हुकुम चलाती रहना और ठाठ करना। लेकिन शादी के बाद शांतनु अपनी पत्नी के साथ अलग रहने लगता है। वह कावेरी की फिक्र नहीं करता और ऊपर से कहता है कि - "तुम्हारा बोझ हल्का हो गया माँ ! हम पर होनेवाला खर्च! अब तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा।"[79] इस प्रकार माता-पुत्र संबंध में दूरी आ जाती है। शादी के बाद शांतनु में परिवर्तन आ जाता है। कमाई का पैसा वह अपने लिए पानी की तरह बहाता है, किंतु माँ को संभालने की बात वह सोचता तक नहीं। चैती इस संदर्भ में कहती है - "उस मरद जात को छोड़ो, बच्चों की हालत देखो। शादी कराते बन गये घरवाले। कमाने क्या लगे, कपड़े-लत्ते पर ही रूपया पानी की तरह बहाने लगे। यह नहीं सोचा माँ के कष्टों कसक को कम कर दें। एक बार भी नहीं कहा कि अब हम संभालेंगे। उस छोरे को देखो शरम-हया बेच जोरू को गाँठ बाँध चल दिया नौकरी पर। एक बार भी नहीं कहा,

'माँ ! तुम भी चलो' "[80]

जब शांतनु के बार-बार खत आने लगे तो कावेरी शांतनु के पास चली जाती है। किंतु बहु के बरताव से नाराज होकर वापस लौट आती है। शांतनु कावेरी को रोकने का भी प्रयास नहीं करता। इस तरह कावेरी और शांतनु इन माता-पुत्र के बीच दूरियाँ आ गयी है और आपसी लगाव भी नहीं रहा।

अतः लेखिका ने वर्तमान बदलते माता-पुत्र संबंधों पर प्रकाश डालने की सफल कोशिश की है।

3.2.17 परिवार में पत्नी एवं लड़की के हेय स्थान की समस्या :

परिवार में पत्नी एवं लड़की के स्थान को हेय माना जाता है। परिवार में सबसे

अधिक प्रताड़नाएँ पत्नी की होती है। कावेरी का पति उसे किसी भी निर्णय की स्वतंत्रता नहीं देता। पति कावेरी को त्याग देने पर उसकी पूछ-ताछ करना भी नहीं चाहता। कावेरी को अपने बच्च का नामकरण करने का अधिकार नहीं दिया जाता। कावेरी के ससुराल वालों ने उसका साँस लेना तक मुश्किल बनाया था।

कावेरी अपने माता-पिता के घर के में भी हेय मानी जाती रही है। उसके उपर हर नियंत्रण को बनाए रखने की कोशिश कावेरी की माँ करती है। जब चीनी खाने के लिए कावेरी मचल उठती है, तो उसकी माँ उसे ऐसी मार देती है कि वह बेहोश तक हो जाती है। कावेरी को देश-विभाजन के समय पाकिस्तान में छोडकर भारत आने में कावेरी कोई अनुचित नहीं मानती। परिवार में नारी ही नारी का सबसे अधिक शोषण करती है। इस संदर्भ में आशारानी व्होरा का कथन द्रष्टव्य है - "जब तक नारी स्वयं नारी की शोषक बनकर अपने ही आड़े आते रहेगी, उसका शोषण बंद नहीं होगा।"[81] अत: कावेरी की माँ के द्वारा ही कावेरी को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। कावेरी माँ को देखकर बेहोश भी होती रही है। माँ के सामने कुछ नहीं बोल पाती।

पति द्वारा त्याग देने पर कावेरी कहाँ रहती है ? क्या करती है ? यह जानने की कोशिश उसके ससुरालवाले नहीं करते। कावेरी के माता-पिता को भी उससे कुछ लेना देना नहीं है। चैती कावेरी के माता-पिता के परिवार के बारे में कहती है - "सच मानो! उसके घर के अहाते में बड़े-बड़े लोगों की बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, हीरे-जवाहरात नवरत्नों की बातें होती हैं, कावेरी की बातें नहीं होती।"[82] इस प्रकार कावेरी को पत्नी के रूप में पति के परिवार में और बेटी के रूप में माता-पिता के परिवार में हेय स्थान दिया जाता है।

अंत में इतना कहा जा सकता है कि लेखिका एक स्त्री होने के नाते उसने अपने स्वानुभूति से परिवार में पत्नी एवं लड़की को किस तरह हेय माना जाता है, इस पर दृष्टिपात किया है।

3.2.18 बच्चों पर अत्यधिक नियंत्रण की समस्या :

बच्चों पर माता-पिता नियंत्रण रखते है, किंतु जब यह नियंत्रण अत्यधिक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

मात्रा में बढ़ जाता है और बच्चों की आजादी खतरे में पड़ जाती है, तो वह एक समस्या बन जाती हैं। पढ़ी-लिखी औरतों के अत्यधिक नियंत्रण के कारण वच्चों के लिए घर जेल वन जाता हैं। इस बारे में चैती का कथन द्रष्टव्य है - "इन पढ़ी-लिखी औरतों से भी भगवान ही बचाए। न जाने कैसी-कैसी लकीरें खीचंती रहती है? बच्चों को ऐसा कसकर रखेंगी कि जैसे वे घर में न रहकर जेल में रहते हो। इतना मालूम होना चाहिए कि घर, घर है और जेल, जेल। बिना बात थानेदार बन जाती हैं।"[83] छोटी-छोटी बातों को लेकर माताएँ अपने बच्चों को डाटती है, जैसे कि सिर में धूल-मिट्टी न डाले, दूसरों के बाल न नोचे आदि। चैती मानती है कि ऐसी माताओं को सूरदास की पोथी पढ़ानी चाहिए। वे यशोदा मैय्या अपने बचपन को भूलकर सलीके और तमीज का बोझ अपने बच्चों पर डाली देती हैं।

कावेरी को भी असमय ही बुजुर्ग बना दिया गया था। उस पर कोई भी निर्णय या कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं दी गयी। कावेरी के बारे में चैती कहती है - "सुन लो जरा उसकी कथा-कहानी भी सात-आठ साल की बिटिया के दिमाग में ठूंस-ठूंस कर दिया कि 'तुम लड़की हो'। यहाँ मत जाओ, वहाँ मत जाओ, लड़कों के साथ मत खेलो, पेड़ पर मत चढ़ो, और वह भौंचक्की-सी माँ को टुकुर-टुकुर देखती रहती है। सुनो जरा ! अभी से उसे यह बताने की क्या जरूरत है कि वह लड़की है। पाँच-सात साल बाद उसे खुद ही पता चल जायेगा कि वह लडकी है।"[84] इस तरह कावेरी को असमय है बुजुर्ग बना दिया गया था।

सुधि अपने बच्चों पर कड़ा नियंत्रण रखती है। कावेरी के बचपन में भी उसे अत्यधिक नियंत्रण में रखा गया था। अतः बच्चों पर अत्यधिक नियंत्रण रखना समस्या वन जाती है, जिसके कारण वच्चे असमय वुजुर्ग बन जाते हैं और उनका व्यक्ति-विकास अवरूद्ध हो जाता हैं।

इस प्रकार डॉ० राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में विभिन्न पारिवारिक समस्याओं को प्रखर वाणी मिलती हैं।

निष्कर्ष :

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि - परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है, जिससे व्यक्ति का विकास होता है। परिवार विविध रक्त-संबंधों से बना होता है और परिवार के विविध प्रकार होते हैं। परिवार की विविध समस्याएँ भी होती हैं। 'कावेरी' उपन्यास में पारिवारिक विघटन की समस्या, घरेलू कामकाज की समस्या, कामचोर पति की समस्या, दांपत्य-प्रेम के अभाव की समस्या आदि पारिवारिक समस्याओं का चित्रण लेखिका डॉ० राज बुद्धिराजा ने किया हैं। यह सभी समस्याएँ उनके समसामायिक परिवेश के प्रति सजगता का प्रमाण देती है।

परिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन समस्याओं को यथार्थ की भावभूमि पर चित्रित करने में लेखिका सिद्धहस्त हैं। इसी का प्रमाण 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ हैं। मनुष्य की वास्तविक पारिवारिक समस्याएँ बिना ऊहापोह किये लेखिका ने सहज, सरल, सुलभता से व्यंजित की हैं। 'कावेरी' उपन्यास की समस्याएँ पारिवारिक संबंधों पर प्रकाश डालती हैं और उसमें आ रहे परिवर्तन को भी सम्मुख उपस्थित करती हैं। जैसे कि पति-पत्नी संबंध, माता-पुत्र संबंध, माता-पुत्री संबंध, पिता-पुत्र संबंध आदि।

इस तरह 'कावेरी' उपन्यास में पारिवारिक समस्याओं का ऊहापोह विरहित यथार्थ की पृष्ठभूमि पर चित्रण करने में डॉ० राज बुद्धिराजा ने सफलता प्राप्त की हैं।

संदर्भ सूची :

1. संपा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषा - शद्ब कोष, पृ० 968
2. मूल संपा० श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्द सागर छठा भाग, पृ० 2864
3. प्रधान संपा० रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश तीसरा खंड़, पृ० 427
4. राममूर्ति सिंह - मानक हिंदी अंग्रेजी कोश, पृ० 178
5. संपा० रामचंद्र वर्मा - प्रामाणिक हिंदी कोश, पृ० 680
6. Burgess E० W० and Locke H. J. – The Family : From Institution of Companionship, P० 8
7. शंभूरत्न त्रिपाठी - भारतीय सामाजिक संरचना और संस्कृति पृ० 37
8. डॉ० महेंद्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, पृ. 5
9. डॉ. मंजु शर्मा - साठोत्तरी महिला कहानीकार, पृ० 38
10. प्रा० ए० वाय्० कोंडेकर - भारतीय समाजाचा परिचय, पृ० 87-88
11. डॉ० मनोहर सराफ - खड़ीबोली रामकाव्यों में चित्रित समाज और संस्कृति, पृ० 19
12. डॉ० मोहिनी शर्मा - हिंदी उपन्यास और जीवनमूल्य, पृ० 11
13. डॉ० मोहिनी शर्मा - हिंदी उपन्यास और उपन्यास और जीवनमूल्य, पृ० 113
14. Dr० C० B० Mamoria – Social Problems and Social disorganization in India. P० 1111
15. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र विश्वकोश, पृ० 120-121
16. वही, पृ० 121
17. वही, पृ० 121
18. वही, पृ० 122
19. वही, पृ० 122
20. वही पृ० 123
21. Irawati Karve – Kinship organization in India, P० 41

22. डॉ॰ मोहिनी शर्मा - हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य, पृ॰ 101

23. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र विश्वकोश, पृ. 122

24. वही, पृ॰ 123

25. वही, पृ॰ 124

26. वही, पृ॰ 124 .

27 . वही, पृ॰ 125

28. वही, पृ॰ 127

29. वही, पृ॰ 125

30. वही, पृ॰ 127

31. वही, पृ॰ 125

32. वही, पृ॰ 126

33. वही, पृ. 125

34. वही, पृ॰ 127

35. डॉ॰ शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ पृ॰ 121

36. डॉ॰ किरण बाला अरोड़ा-साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी, पृ॰ 88

37. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र विश्वकोश, पृ॰ 120

38. डॉ॰ एम॰ के॰ गाडगील - हिंदी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, पृ॰ 247

39. शंभूरत्न त्रिपाठी - भारतीय समाजिक संरचना और संस्कृति, पृ॰ 50

40. डॉ॰ मंजु शर्मा - साठोत्तरी महिला कहानीकार, पृ॰ 52

41. डॉ॰ राज बुद्धिराजा - कावेरी - पृ॰ 76

42. वही, पृ॰ 76-77

43. वही, पृ॰ 38

44. वही, पृ० 38
45. डॉ० जे० एम० देसाई - आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, पृ० 9
46. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 12
47. वही, पृ० 11
48. वही, पृ० 12
49. वही, पृ० 13
50. डॉ० पुष्पापाल सिंह - समकालीन कहानी : रचना मुद्रा पृ० 115
51. डॉ० लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय -द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० 65
52. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 19
53. वही, पृ० 31
54. वही, पृ० 59
55. वही, पृ० 59
56. वही, पृ० 21
57. वही, पृ० 32
58. डॉ० प्रभा वर्मा - हिंदी उपन्यास सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप, पृ० 265
59. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 18
60. वही, पृ० 23
61. वही, पृ० 26
62. वही, पृ० 58
63. डॉ० राधा गिरधारी - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ० 93
64. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 42
65. वही, पृ० 39
66. वही, पृ० 41

67. डॉ० रमेश देशमुख - आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृ० 218

68. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 23

69. वही, पृ० 45

70. संपा० डॉ० महिप सिंह - हिंदी उपन्यास समकालीन परिदृश्य, पृ० 10

71. डॉ० पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ, पृ० 162

72. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 34

73. वही, पृ० 31

74. वही, पृ० 26

75. वही, पृ. 47

76. वही, पृ० 29

77. वही, पृ० 58

78. डॉ० मंजु शर्मा - साठोत्तरी महिला कहानीकार, पृ० 86

79. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 38

80. वही, पृ० 50-51

81. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी अस्मिता और अधिकार, पृ० 76

82. डॉ० राज बुद्धिराज - कावेरी, पृ० 63

83. वही, पृ० 55

84. वही, पृ० 57